भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

सत्यमेव जयते

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

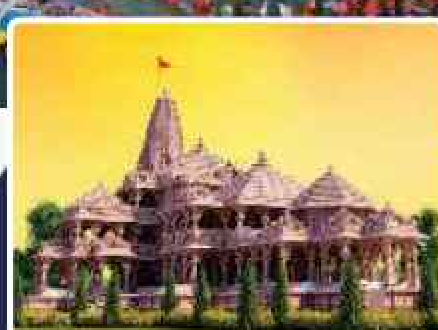

अंक
05 वां
(वर्ष 2025)

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

भारत सरकार
Government of India
गृह मंत्रालय
Ministry of Home Affairs
राजभाषा विभाग
Department of Official Language
प्रशस्ति पत्र
Commendation Certificate
'क' क्षेत्र/'A' Region
श्रेणी कार्यालय/Category Office

यह प्रशस्ति पत्र **श्री दिनेश सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, पासपोर्ट कार्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश** को वर्ष **2023–24** के दौरान उनकी संगठन द्वारा संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए **द्वितीय** स्थान प्राप्त करने में उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

This Commendation Certificate is awarded to **Sh. Dinesh Singh, Junior Translation Officer, Passport Office, Bareilly, Uttar Pradesh** for his/her admirable contribution to his/her organisation for being adjudged **Second** for commendable performance in implementing the Official Language Policy of the Union during the year **2023-24**.

सचिव, भारत सरकार
Secretary to the Government of India

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

अंक 05 वां (वर्ष 2025)

संरक्षक

श्री शैलेन्द्र सिंह
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

संपादक

श्री दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष सहयोग

श्री संदीप शुक्ला
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

श्री संजय कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

श्री मिथुन कुमार
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

श्री मो. आतिर अंसारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कॉम्पलैक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शिनी नगर, बरेली - 243122

कीर्तवर्धन सिंह
KIRTI VARDHAN SINGH

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
एवं विदेश मंत्रालय
भारत सरकार
Minister of State
Environment, Forest & Climate Change
and External Affairs
Government Of India

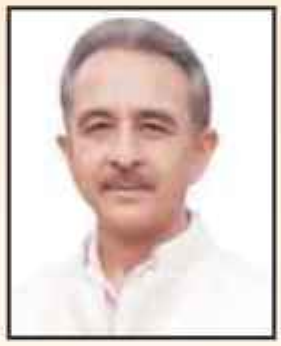

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका ''**पांचाल**'' के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

वास्तव में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय विदेश मंत्रालय के भारत में स्थित महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं और इन्हीं के माध्यम से भारतीय नागरिकों के भारत के बाहर अन्य देशों में सम्भावनाओं के द्वार खुलते हैं अत: इनमें हिंदी के प्रसार का असर दूरगामी होता है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में बहुत सहयोग मिलेगा तथा सभी कार्मिक व पाठक हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

इस शुभ अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली से जुड़े सभी कार्मिकों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(कीर्तवर्धन सिंह)

MOEF&CC: Akash Wing, Indira Paryavaran Bhawan, Jor Bagh Road New Delhi-110003
Tel: 011-20819418, 20819421 Fax: 011&20819207 E-mail: mos.kvs@gov in
MEA : South Block, New Delhi- 110011 Tel: 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax: 011-23011425 E-mail: moskvso@mes.gov.in

पबित्र मार्घेरिटा
Pabitra Margherita

सत्यमेव जयते

विदेश एवं वस्त्र राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for
External Affairs and Textiles
Government of India, New Delhi

संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका ''पांचाल'' के पंचम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

वास्तव में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय विदेश मंत्रालय के भारत में स्थित महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं अत: इनमें राजभाषा के प्रसार का असर दूरगामी होने की सम्भावना है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में बहुत सहयोग मिलेगा तथा सभी कार्मिक व पाठक हिंदी के अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

इस शुभ अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली से जुड़े सभी सहकर्मियों एवं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद देता हूं तथा यह अंक पाठकों को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजक लगेगा ऐसी कामना करता हूं।

(पबित्र मार्घेरिटा)

दिनांक : 03/02/2025
नई दिल्ली

Ministry of External Affairs, Room No 171, South Block, New Delhi-110011
Tel: 011-23017763 23088710 Fax: 011-23016726 E-mail: mos.pm@mea.gov.in

Arun Kumar Chatterjee
Secretary (CPV & OIA)
Tel: +91-11-2308 8134
email: secycpv@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

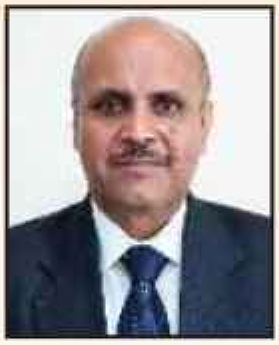

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि **पासपोर्ट कार्यालय, बरेली** के कर्मियों के प्रयास से हिंदी पत्रिका **'पांचाल'** का **पंचम अंक** प्रकाशित किया जा रहा है जो प्रशंसनीय है।

आज के वैश्विक परिदृश्य में हिंदी ने अपना एक विशेष स्थान बनाया है, इसका मुख्य कारण सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति है जिससे नई तकनीक के सहयोग से हिंदी में काम करना अत्यंत ही सरल हो गया है।

आशा है कि 'पांचाल' पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार को निरंतर बल मिलता रहेगा तथा यह राजभाषा संबंधित जारी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी ।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों व संपादक मंडल को बधाई देता हूँ एवं हिंदी पत्रिका 'पांचाल' के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

अरुण कुमार चटर्जी

(अरुण कुमार चटर्जी)
सचिव (सी.पी.वी एवं ओ.आई.ए)

नई दिल्ली
दिनांक: 7 फरवरी 2025

अपर सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)
दूरभाष: 011-23086665
ईमेल: jshindi@mea-gov-in

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली अपनी गृह पत्रिका 'पांचाल' के पांचवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी पहले चार अंकों की तरह अत्यंत सरस और पठनीय होगा।

किसी भी पत्रिका के प्रकाशन का प्राथमिक उद्देश्य पाठकों के बीच सूचना और जानकारी पहुंचाना और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक क्षमता एवं रचनाधर्मिता पैदा करना होता है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों को मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करेगी और इससे कार्मिकों और पाठकों की मौलिकता और रचनात्मक पहलू को बढ़ावा मिलेगा।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय की गृह पत्रिकाओं का अप्रतिम योगदान होता है। वस्तुत: पासपोर्ट कार्यालय जन-संपर्क कार्यालय होते हैं जहां सभी भाषा-भाषी लोग आते हैं। उनके बीच हिंदी में संवाद करना और हिंदी भाषा के प्रति उत्साह का सृजन सराहनीय है। इससे हिंदी भाषा की व्यापकता में वृद्धि होती है। 'पांचाल' इस दृष्टि से उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रही है।

मैं पत्रिका के पंचम अंक के सफल प्रकाशन के लिए साधुवाद देता हूँ।

(राजेश वैष्णव)

श्रीमती रीमा होता सिंह (भा.रा.से.)
मुख्य आयकर आयुक्त, बरेली
एवं अध्यक्ष नराकास, बरेली

सत्यमेव जयते

मुख्य आयकर आयुक्त
Chief Commissioner of Income Tax
आयकर भवन, कमला नेहरू मार्ग
Aaykar Bhavan, Kamla Nehru Marg
सिविल लाइंस, बरेली-243001
Civil Lines, Bareilly- 243001

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली, राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है ।

राजभाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य है। विभागीय राजभाषा पत्रिकाएं न केवल राजभाषा के कार्यान्वयन को गति प्रदान करती हैं बल्कि विभागीय प्रतिभाओं को एक सार्थक मंच भी प्रदान करती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन से विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलेगी ।

मैं 'पांचाल' पत्रिका के पंचम अंक के प्रकाशन के लिए बधाई देती हूँ और अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ ।

(रीमा होता सिंह)

डॉ. के.जे. श्रीनिवासा
संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
और मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली अपनी हिंदी गृह पत्रिका **'पांचाल'** का **पंचम अंक** प्रकाशित कर रहा है, यह अत्यंत प्रसन्ता का विषय है। हिंदी पत्रिकाएँ राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिये एक सशक्त माध्यम होती है।

गृह पत्रिकाएँ जहाँ एक ओर कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता के संवर्धन में सहायक होती है, वही दूसरी ओर कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये अनुकूल वातावरण तैयार करने में सहायक सिद्ध होती है।

'पांचाल' के इस अंक के प्रकाशन के लिये कार्यालय के सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई। आशा है कि इस पत्रिका की यात्रा इसी प्रकार अनवरत चलती रहेगी।

श्रीनिवासा

(डॉ. के.जे. श्रीनिवासा)
संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

संरक्षक की कलम से

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

शैलेंद्र सिंह (क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी)

सरकारी सेवा में कार्य करना सौभाग्य की बात होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आपको जनता की सेवा करने का अवसर मिलता है। जन सेवा की भावना से किया गया सकारात्मक कार्य हमेशा फलदायी होता है। सरकारी सेवा में कार्य का एक विशेष लाभ यह भी होता है कि आप जीवन में नियमबद्ध हो जाते हैं। इसके पीछे की वजह यह है कि आपको एक नियत समय पर कार्यालय आना है और नियत समय पर मध्यान्ह भोजन निर्धारित रहता है और छुट्टी होने का समय भी निश्चित होता है। इसके अतिरिक्त कार्यालय में रहने के दौरान भी आपको नियमों के अधीन ही सारे कार्यकलाप करने होते हैं। यहां तक कि हमारा पहनावा भी एक दायरे में होता है। जब हम दिन के 9-10 घंटे नियमों में बंधकर रहने लगते हैं और लम्बे समय तक यह प्रक्रिया दोहराते रहते हैं तो हम अपने जीवन में स्वत: नियम पाबंद हो जाते हैं। नियम पाबंद होने के कितने लाभ होते हैं इसके बारे में सबको पता है।

जनता की सेवा की भावना और नियमों की पाबंदी की बात करें तो बात आती है कि जनता के लिए सर्वसुलभ भाषा का प्रयोग। जब तक जनता तक आप अपनी बात नहीं पहुंचा सकते और जनता की बात आप तक नहीं पहुंच पाती तब तक सेवा कार्य किया ही नहीं जा सकता है। इसलिए भाषा का सर्वसुलभ होना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। यदि भाषा सर्वसुलभ होने के साथ-साथ सरल हो तो फिर क्या ही कहना।इससे जनता की हमसे निकटता बढ़ जाती है और हम भी जनता की बात आसानी से समझ सकते हैं। अब यदि हम अपने देश में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा की बात करें और उपरोक्त मानकों पर अपने देश में सर्वोत्तम भाषा की बात करें तो हिंदी भाषा का ही नाम आएगा। इसकी पहुंच अधिसंख्य लोगों तक है। यह सरल भी है। मुझे तो लगता है कि इसीलिए संविधान सभा ने बहुत सोच विचार कर हिंदी को भारत गणराज्य की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

इसलिए सरकारी सेवक के नाते राजभाषा में काम करके हम न केवल संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हैं अपितु हमारी बात आमजनता तक आसानी से पहुंच पाती है। इससे जनसेवा की मूल भावना की पूर्ति भी होती है। इसलिए हमें लगातार राजभाषा में काम कर इसे और आगे ले जाने का प्रयास करते रहना होगा। पिछले कुछ वर्षो में भारत सरकार द्वारा राजभाषा के विषय में कई सकारात्मक कदम उठाये गए हैं। जिनमें अखिल भारतीय

राजभाषा सम्मेलन, क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, संसदीय समिति द्वारा कार्यालयों का नियमित निरीक्षण व विभिन्न प्रकार के टूल्स के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का सरलीकरण आदि सम्मिलित हैं।

राजभाषा के विकास की जिम्मेदारी हम सभी सरकारी सेवकों की ही है चूंकि सरकार के नियमों, कानूनों, सुविधाओं और व्यवस्थाओं को आमजनता तक पहुंचाने की जिम्मेदारी हम सरकारी सेवकों की ही होती है। इसलिए राजभाषा में काम करके आम जनता तक इन्हें पहुंचाने से राजभाषा में स्वयं विस्तार होगा। साथ ही हमें संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन की आत्म संतुष्टि का भी आभास होगा।

इन्हीं भावनाओं को सजोए हुए हम पासपोर्ट कार्यालय, बरेली में राजभाषा के प्रसार में नियमित रूप से वृद्धि की ओर अग्रसर हैं। हमारे कार्यालय में शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है एवं राजभाषा के सभी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जा रहा है। इसलिए संसदीय समिति द्वारा कार्यालय का दिनांक 20 नवम्बर, 2024 को किया गया राजभाषा सम्बंधी निरीक्षण भी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसके फलस्वरूप कार्यालय नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, बरेली द्वारा लगातार राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हमारे कार्यालय को पिछले वित्तीय वर्ष में उत्तर क्षेत्र -2 के केंद्रीय कार्यालयों में 11-50 कार्मिकों वाले कार्यालय की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार दिया गया। यह हमारे लिए गर्व और आत्म संतुष्टि का अवसर था। यद्यपि हम अपने प्रयासों को और बढ़ाते हुए अगली बार प्रथम स्थान पर आने का प्रयास करेंगे।

हम राजभाषा के विकास के लिए सतत योगदान देने में खुशी की अनुभूति करते हैं। इसी क्रम में कार्यालय ने अपनी पत्रिका पांचाल के पंचम अंक का प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है यह अंक पिछले अंकों से बेहतर होगा और हम इस अंक में पाठकों को ज्ञानवर्धक और रुचिकर साहित्य का समागम प्रस्तुत कर पाएंगें तथा राजभाषा के विकास में अपनी एक आहुति और देने का प्रयास करेंगे।

अंत में मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं एवं बधाइयां देता हूँ।

(शैलेन्द्र सिंह)
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

संदीप शुक्ला
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय,
बरेली

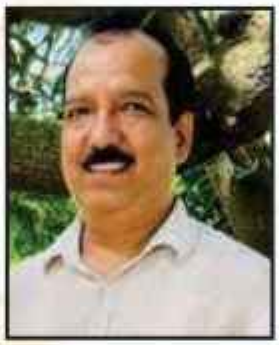

शुभ संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के पाचवां अंक का प्रकाशन कर रहा है ।

वास्तव में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय विदेश मंत्रालय के भारत में स्थित महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं अत: इनमें राजभाषा के प्रसार का असर दूरगामी होने की सम्भावना है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में बहुत सहयोग मिलेगा तथा सभी कार्मिक व पाठक हिंदी के अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

इस शुभ अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली से जुड़े सभी सहकर्मियों एवं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद देता हूं तथा यह अंक पाठकों को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजक लगेगा ऐसी कामना करता हूं।

(संदीप शुक्ला)
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

संपादकीय

दिनेश सिंह (कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

पासपोर्ट कार्यालय बरेली की राजभाषा पत्रिका ''पांचाल'' के चार अंकों के सफल प्रकाशन के बाद पंचम अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है।

पांचाल के पिछले अंकों को सभी पाठकों ने जो प्रेम और स्नेह दिया है उसने हमें हर नए अंक को और बेहतर करने की प्रेरणा दी है। पिछले अंक के संबंध में विभिन्न महानुभावों ने अपनी उत्साहवर्धक टिप्पणियां प्रेषित की हैं उन सभी को सादर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हम पत्रिका के इस अंक की ओर आगे बढ़ते हैं। पत्रिका के इस अंक के लिए कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, पूर्व सहयोगियों तथा परिवार के सदस्यों ने अपनी-अपनी कृतियां दी है। इस अंक में आपको विभिन्न विधाओं पर रचनाएं मिल जाएंगी। इसके अतिरिक्त हमने प्रयास किया है कि पत्रिका के माध्यम से पासपोर्ट कार्यालय बरेली में पिछले लगभग एक वर्ष में हुई गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से आप तक पहुंचाएं ताकि हमारे कार्यालय में चल रही राजभाषा संबंधी गतिविधियों के साथ अन्य क्रिया-कलापों को हम सभी पाठकों तक पहुंचा सकें। कुल मिलाकर पत्रिका के इस अंक को ऐसा रूप देने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह रुचिकर लगे और इसके प्रकाशन का उद्देश्य पूरा हो।

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा के विकास में अपनी जिम्मेदारी को निष्ठा पूर्वक निभा रहा है। हम इस बात के लिए कार्यालय स्तर पर निरंतर प्रयास करते रहते हैं कि कार्यालय का सारा काम हिन्दी में ही हो और इसके लिए विभिन्न स्तर पर निगरानी भी की जाती है । इसका असर यह है कि हम राजभाषा में सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर पा रहें हैं और यह भी जान पा रहें हैं कि यह कभी कठिन था ही नहीं बल्कि लोगों की मानसिकता और दृढ़-निश्चय की कमी के कारण कठिन लगता है। लक्ष्यों को प्राप्त करके हम संवैधानिक दायित्व की पूर्ति ही नहीं करते बल्कि हमें आत्मीय खुशी होती है कि हम राजभाषा को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए अपने स्तर से योगदान दे पा रहें हैं। इसके साथ ही अब हमें राजभाषा में हर मंच से पहचान मिलनी शुरू हो गई है। इसमें गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली सभी सम्मिलित हैं।

राजभाषा के विकास में अपना योगदान बढ़ाते रहने के क्रम में पासपोर्ट कार्यालय बरेली ने इस वर्ष पहली बार एक दिवसीय 'राजभाषा सम्मेलन एवं कार्यशाला' का आयोजन 01 मार्च, 2025 को बरेली में किया। जिसमें राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, बरेली ने सहयोगी की भूमिका निभाई। सम्मेलन में पाँच सत्रों में राजभाषा के विकास के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। इस सम्मेलन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली के विभिन्न कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किया गया यह अपनी तरह का अनूठा प्रयास था जो कि अपने उद्देश्य में सफल रहा।

पत्रिका प्रकाशन हमारे कार्यालय में 'राजभाषा उत्सव' की तरह का माहौल बनाता है। जैसे घर में कोई उत्सव होता है तो घर के सभी सदस्य अपना कुछ न कुछ योगदान देते हैं ठीक उसी प्रकार कार्यालय में सभी सहयोगी एवं उनके परिवार के सदस्य पत्रिका की सामग्री तैयार करने के लिए अपना योगदान देते हैं । पत्रिका प्रकाशित होने पर उसमें अपनी कृति देखकर सभी आनंद की अनुभूति करते हैं और इससे कार्मिकों में कार्यालय में हिंदी में काम करने की स्व-प्रेरणा मिलती है । इस वजह से कार्यालय में हिन्दी में काम करने का माहौल बना रहता है।

हमारे देश में राजभाषा ने विपरीत परिस्थितियों से आगे निकलकर आज प्रगति का पथ कैसे पकड़ लिया है, इस बात को इंगित करती, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की प्रसिद्ध कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं:-

टूटे हुए तारों से फूटे वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूं,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ।

पत्रिका के इस अंक को इस रुप तक पहुंचाने के लिए अपना सहयोग देने वाले कार्यालय के सभी सहयोगियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस आशा और विश्वास के साथ कि 'पांचाल' का यह अंक पाठकों को अत्यंत रुचिकर एवं मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक लगेगा, पत्रिका का पांचवा अंक आपके सामने प्रस्तुत है। आप सभी से अनुरोध है कि आप इसको पढ़कर अपनी टिप्पणी जरूर भेजें ताकि अपनी कमियों को दूर कर हम भविष्य में और बेहतर करने के लिए प्रेरित हों और लगातार आपके समक्ष परिमार्जित पत्रिका प्रस्तुत कर राजभाषा के विकास में अपना योगदान देते रहें।

दिनेश सिंह

(दिनेश सिंह)
सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

पांचाल
अंक 05 वां (वर्ष 2025)

अनुक्रम

क.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	अच्छी आदतों से अनुशासन को पाना	शैलेंद्र सिंह	14
2	आज की विदेश नीति	संदीप शुक्ला	15-16
3	पासपोर्ट सेवा में चार वर्ष: मेरी कुछ स्मृतियाँ	राम सिंह	17-18
4	परिश्रम ही सफलता की कुंजी है	मोहम्मद आतिर अंसारी	18
5	बाबू जी	दिनेश सिंह	19-21
6	कुंभ नगरी प्रयाग: आस्था और भव्यता का अनुभव	श्रीश श्रीवास्तव	22
7	महर्षि वाल्मीकि का आध्यात्मिक रूपांतरण	गिरीश चन्द्र	23
8	हाँ यही है जीवन की सच्चाई	नीतू वर्मा	23
9	बाल्यावस्था	छाया चौबे	24
10	जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है	आकांक्षा सक्सेना	24
11	दक्षिण भारत के केरल राज्य के कुछ प्रसिद्ध जलप्रपात	विक्रांत श्रीवास्तव	25-26
12	मेरे प्रिय प्रधानमंत्री, मेरा अनुभव	श्रेय कृष्ण सक्सेना	26
13	कुछ पग तुम भी साथ धरो	नीरा पाण्डेय	27
14	कुंभ और महाकुंभ: एक पवित्र संगम	योगिता बिष्ट	27-28
15	चाय	मोनिका शुक्ला	28
16	धर्म	अनुराग दुबे 'अंशुल'	28
17	बढ़ती उम्र का एहसास	संजय कुमार पाण्डेय	29
18	रिश्ते सिमट गए मोबाइल में	साक्षी सक्सेना	29
19	मेरे माता-पिता मेरी जन्नत	विशाल	30
20	मेरे ताऊ व्यग्र जी	मनीष शर्मा	30
21	नारी की पहचान	प्रियंका पाण्डेय	31
22	कुम्भ क्या है ?	रंजीत कुमार दास	32-33
23	जीवन एक अज्ञात दौड़	संदीप सिंह	33-34
24	मैं गधा था घोड़ा हो गया	खीम सिंह	34
25	ब्रेन रोट	मनीष कुमार सिंह	35
26	जुगनू की रोशनी	अब्दुल समद	35
27	माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ	धर्मवीर सिंह	36
28	बेटी	विनय चंद्र	37
29	स्त्री की चाह	निधि पाण्डेय	38
30	सरकारी नौकरी - एक सपना	काव्यांश कुमार	38

छायाचित्र अनुक्रम

31	पासपोर्ट समाचार		39-40
32	बाल-कलाकार		41
33	स्वच्छता पखवाड़ा, वृक्षारोपण एवं पदयात्रा के छायाचित्र		42
34	कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र		43
35	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण संबंधी छायाचित्र		44

अच्छी आदतों से अनुशासन को पाना

शैलेंद्र सिंह (क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी)

मेरे प्यारे साथियों इस लेख के द्वारा मैं अपने विचारों को आपसे व्यक्त करना चाहता हूं, जिसके द्वारा हम अपने जीवन में सफलता पा सकते हैं। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपनी दिनचर्या के विषय में गहन अध्ययन करें और यह देखें कि वह कौन सी आदतें हैं जो हमारी सफलता में बाधा उत्पन्न कर रही हैं और उन्हें छोड़कर कौन सी दूसरी अच्छी आदतें हैं, जिन्हें हम अपनी दैनिक दिनचर्या में समायोजित कर सकते हैं।

मिसाल के तौर पर हम अगर देर से खाना खाते हैं। तत्पश्चात उसी क्रम में देर से सोते हैं तो हमारा अगला दिन देर से उठना स्वाभाविक हो जाता है, हमारी पिछली शाम की गलत आदत की वजह से। इसका परिणाम यह होगा कि आप व्यायाम नहीं कर सकते हैं एवं खीझ से भरे रहेंगे। जिसके कारण आप शाम तक परेशान रहेंगे और फिर देर से खाकर देर से सोएंगे और अगले दिन देर से उठेंगे और यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। अब इसी में बदलाव लाएं और सूर्यास्त से पहले खाना खाए और फिर समय से सो जाएं। जिसके बाद समय से उठकर व्यायाम और नाश्ता समय से करते हुए अपने कार्यस्थल पर जाएं तो अपने काम में एक गुणवत्ता वर्धन की स्थिति में आ सकते हैं। इस बदलाव को लाने के लिए हमें अपनी पूरी जीवन शैली में बड़े बदलाव की जरूरत नहीं है बल्कि स्वयं बदलाव की मदद से हम अपने जीवन को बदल सकते हैं। जैसे कि जल्दी सो सोने के लिए आप खाना जल्दी खा लें टीवी और मोबाइल से दूरी बना लें। इससे मन में शांति रहेगी और गहरी नींद भी आएगी। अपनी संगति पर ध्यान दे सकते हैं तथा कार्यालय में एक ऐसा माहौल बनाएं कि यथोचित तरीके से हम अपने कार्य एवं जिम्मेदारी समय से पहले समाप्त कर सकें।

इसके लिए एक सकारात्मक व्यक्ति के सानिध्य में रहें और जो आपके साथ रहते हों तो उनकी सकारात्मक शैली एवं प्रवृत्ति का सृजन अपने भीतर करें। यह उसी तरह से है कि अगर आप कुछ दिन व्यवसाय और व्यापार करने वालों के साथ बैठे तो आप आय के स्रोत ढूंढने लगेंगे। आप कुछ दिन फौज के अफसर के साथ रहेंगे तो आप में देशभक्ति जाग जाएगी। खराब संगत में अगर जुआरी और शराबी के बीच रहेंगे तो यह हमें भी प्रभावित कर सकता है।

इसी बात पर आपसे आवाहन करता हूं कि अपनी दैनिक दिनचर्या पर ध्यान दीजिए और इसकी निगरानी करें कि हम अपने जीवन में क्या सुधार ला सकते हैं। वो कहते हैं न 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा, हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा' तो सुधार के लिए और बदलाव लाएंगे। यह हम पर प्रभु की असीम कृपा है कि उन्होंने हमें समाज की सेवा करने का अवसर दिया है और इसके लिए हमें कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए।

इस आशा में कि हम सब एक समूह में रहकर अच्छी आदतों का चुनाव करके अपने जीवन और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का पूरी श्रद्धा से निर्वहन कर सकें, यह सोच हममें जागृत रहे।

आज की विदेश नीति

संदीप शुक्ला (सहायक पासपोर्ट अधिकारी)

दूसरे देशों के साथ संबंधों को किस तरह बनाए रखा जाए उसकी रूपरेखा विदेश नीति कहलाती है । विदेश में रह रहे देशवासियों की सुरक्षा देश को व्यापार को प्रोत्साहन विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य होता है।इसके अलावा विवादों को कूटनीति के जरिए हल करना भी इसका उद्देश्य होता है।

जो देश भारत के साथ सहयोग नहीं करता है या परोक्ष रूप से देश की अखंडता को चोट पहुंचाने का कार्य करता है या उसका झुकाव दुश्मनों की तरफ है, उसके साथ किस तरह बर्ताव करना है यह विदेश नीति तय करती है। जैसे पाकिस्तान हमारा पड़ोसी देश है लेकिन शुरू से ही भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल रहा है , प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भारत के विरोधियों को बढ़ावा देता है, विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारत का विरोध करता है-इन सब को देखते हुए वर्तमान भारत सरकार ने पाकिस्तान से सभी प्रकार के व्यापार बंद कर दिए हैं। पाकिस्तान भारत में कोई निर्यात नहीं कर पा रहा है और न ही भारत से सस्ता सामान आयात कर पा रहा है। इससे पाकिस्तान को आर्थिक संकट में डाल दिया। साथ ही सभी सांस्कृतिक व कई खेल प्रतिबंध भी लगा दिए हैं।

इसी तरह से जब बांग्लादेश में भारत की हितैषी सरकार थी तब भारत सरकार बांग्लादेश के साथ व्यापार के साथ-साथ आर्थिक व सांस्कृतिक सहयोग भी करती थी। किंतु जब बांग्लादेश की सरकार को गिराकर वहां ऐसी सरकार आ गई जिसका रूख भारत के प्रति सकारात्मक नहीं था,तब भारत ने भी बांग्लादेश के साथ सहयोग कम कर दिया और वहां के लोगों को मिलने वाली सुविधाओं पर भी पाबंदियां लगा दी।

ऐसे ही जो देश भारत के साथ सहयोग करता है,विपरीत परिस्थितियों में भी साथ खड़ा रहता है,उसके साथ कैसा व्यवहार करना है, यह विदेश नीति तय करती है, जैसे रूस।जब रूस एकीकृत देश था व विघटित होने के बाद भी सदैव भारत का सहयोगी रहा है और कई बार संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में खुलकर भारत का साथ दिया है। इसी के अनुरूप भारत भी रूस से काफी व्यापार करता है और रक्षा सामग्रियों का आयात करता है।

किसी देश की विदेश नीति का असर उस देश के हर मंत्रालय पर पड़ता है। जैसे व्यापार को बढ़ावा वाणिज्य मंत्रालय करता है, लेकिन किस देश के साथ किस वस्तु का,कितनी मात्रा में,किस मुद्रा में व्यापार करना है, इसका निर्धारण विदेश नीति के तहत होता है। किसी दूसरे देश के द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से युद्ध करने पर क्या कार्यवाही करनी है, यदि युद्ध करना है तो किस तरह करना है, यह विदेश विभाग तय करता है। खेल तो खिलाड़ी खेलते हैं, लेकिन किस देश के साथ खेलना है, यह विदेश नीति के तहत तय होता है। इसी तरह से किस-किस देश से सांस्कृतिक संबंध रखना है,यह भी विदेश नीति तय करती है। सरकार के वे सभी मंत्रालय जिनका वास्ता दूसरे देशों से पड़ता है, उन सभी पर विदेश नीति का प्रभाव पड़ता है ।

विदेश नीति पर सरकार के रुख का भी असर पड़ता है। जैसे 2014 से पहले की विदेश नीति के अनुसार भारत को किसी भी देश या गुट का समर्थन न करना व सबसे बराबर दूरी बनाए रखना था, किंतु वर्तमान में भारत की नीति सभी का समर्थन,सभी से व्यापार करना है। साथ ही किसी भी घटना या तथ्यों का विश्व के किसी भी मंच पर प्रमुखता से बचाव या खंडन करना है।

रूस-यूक्रेन का युद्ध काफी समय से चल रहा है, पूरी दुनिया उनके समर्थन में दो भागों में बट गई है, लेकिन भारत की विदेश नीति आज के समय में ऐसी सुदृढ़ है कि दोनों देश भारत को मित्र मानते हैं। युद्ध के बीच में दोनों देशों से अच्छे संबंध होने के कारण भारत ने अपने सभी नागरिकों को वहां से सुरक्षित वापस अपने देश लौटाया। बदली विदेश नीति के कारण ही अफगानिस्तान में युद्ध के दौरान अफगानिस्तान और अमेरिका से अच्छे संबंध होने के कारण सभी भारतीयों के साथ-साथ अन्य देशों के नागरिकों को भी सुरक्षित निकाला। ऐसे ही चाहे इजराइल हो या फिलिस्तीन, इराक सभी देशों से भारत के मित्रवत संबंध है।

विश्व में कहीं भी कोई भी घटना या हलचल होती है तो भारत के पक्ष को भी महत्व दिया जाता है। वर्तमान में भारत सरकार विश्व के किसी भी पटल पर अपना पक्ष प्रमुखता से रखती है और भारत की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कदम उठाती है। पूर्व में किसी आतंकी हमले होने पर जहां बदला लेने की बात करके घटना को रफा दफा कर दिया जाता था तो वहीं आज की विदेश नीति के तहत आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले देशों के अंदर घुसकर उनके ठिकानों को नष्ट कर दिया जाता है।

वर्तमान विदेश नीति के कारण विश्व में कोई भी आपदा आने पर भारत सर्वप्रथम निस्वार्थ भाव से सभी देशों को सहयोग देने के लिए तत्पर रहता है। चाहे भारत को अपना हितैषी न मानने वाला मिस्र देश भी हो,जहां भूकंप आने पर सबसे पहले मानवीय सहायता भेजी थी। ऐसे ही अपने देश से कई गुना मजबूत देश चीन से भारत नहीं डरा और देश के हित के अनुसार ही वार्ता के लिए तैयार हुआ। यह भारत की विदेश नीति का ही कमाल था कि 2023 में भारत ने सफल जी-20 का आयोजन किया जिसमें 25 से भी अधिक देशों ने शिरकत की और नए भारत का अभ्युदय देखा। यह भारत की राजनीतिक व कूटनीतिक जीत थी कि सम्मेलन में भारत के कई प्रस्तावों को मंजूरी दी गई और विपरीत सोच वाले देशों के बीच सर्वसम्मति से घोषणा-पत्र जारी कराया जा सका।

विगत 10 वर्षों में भारत की विदेश नीति में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ है और इसने समाज के हर वर्ग पर प्रभाव डाला है एवं सभी पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव आया है। भारत आज विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है।यदि ऐसा ही चलता रहा तो जल्द ही भारत पूर्ण विकसित राष्ट्र बन जाएगा। भारत की विदेश नीति का ही प्रभाव है कि भारत आज सभी विकसित देशों का सिरमौर बना हुआ है और ग्लोबल साउथ की समस्याओं को विश्व के विभिन्न मंचों पर प्रमुखता से उठाता है।

पासपोर्ट सेवा में चार वर्ष: मेरी कुछ स्मृतियाँ

श्री राम सिंह (पूर्व क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी)

सरकारी सेवा में पिछले 27 वर्षों के दौरान मैंने विभिन्न पदों पर कई संगठनों में कार्य किया है। जब मैं इन वर्षों को याद करता हूँ, तो बहुत सी यादें ताजा हो जाती हैं, जो मुझे उन अद्वितीय चार वर्षों (2013-2017) में वापस ले जाती हैं, जो मैंने बरेली में क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के रूप में बिताए थे। यह एक ऐसा कार्यकाल था, जिसने न केवल मेरी पेशेवर क्षमताओं को निखारा बल्कि मेरे व्यक्तिगत जीवन पर भी एक अमिट छाप छोड़ी।

बरेली में मेरा कार्यकाल उत्साह और संघर्ष का मिश्रण लेकर शुरू हुआ था। मेरे वरिष्ठ अधिकारी श्री मुक्तेश परदेशी, जो तब के मुख्य पासपोर्ट अधिकारी एवं संयुक्त सचिव थे, उन्होंने स्नेहपूर्ण तरीके से मेरी जिम्मेदारियों और सार्वजनिक हित में किए जाने वाले निर्णयों के बारे में मुझे मार्गदर्शन दिया। उनके मार्गदर्शन में जब मैंने बरेली में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की जिम्मेदारी संभाली, तो मुझे तुरंत एहसास हुआ कि मेरे कंधों पर जो भारी जिम्मेदारी है, वह कितनी बड़ी है। यह कार्यालय उत्तर प्रदेश के 13 जिलों में फैली विशाल जनसंख्या को सेवा प्रदान करता था और यह मेरा कर्तव्य था कि मैं यह सुनिश्चित करूं कि पासपोर्ट संबंधित सेवाएं प्रभावी और समयबद्ध रूप से प्रदान की जाएं।

मैंने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी (RPO) की भूमिका व इस काम की बारीकियों को समझना शुरू किया। दस्तावेजों की जांच से लेकर आवेदकों से साक्षात्कार लेने तक, प्रत्येक कार्य में छोटे लेकिन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देने और जटिलताओं को समझने की आवश्यकता थी। लेकिन यह सिर्फ आवेदन प्रक्रिया तक सीमित नहीं था। यह लोगों की सेवा करने के संबंध से था, उनकी व्यथा सुनने के बारे में था, और उनके अनुभव का हिस्सा बनने के बारे में था - पासपोर्ट कार्यालय में और जीवन में भी।

इन वर्षों में मुझे कई ऐसे लोग मिले, जिन्होंने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी। एक बुजुर्ग व्यक्ति थे, जो 'हज' पर जाने की इच्छा रखते थे, लेकिन लंबित कोर्ट के मामलों के कारण उन्हें पासपोर्ट नहीं मिल पा रहा था। जब उन्हें सही मार्गदर्शन मिला और उनके हज यात्रा के लिए अल्पकालिक पासपोर्ट जारी किया गया, तो उनकी आंखों में खुशी से मुझे अपार संतोष प्रदान किया। ऐसे कई उदाहरण थे, जहाँ सही मार्गदर्शन से मैं और मेरी टीम आवेदकों की मदद कर पाए। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के रूप में मैं केवल एक सुविधा प्रदाता नहीं था, बल्कि एक समस्या समाधानकर्ता भी था। मुझे कई ऐसे मामले याद आते हैं, जहाँ आवेदकों को दस्तावेजी मुद्दों या प्रशासनिक अड़चनों के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। ऐसे मामलों में, मेरी टीम और मैंने निरंतर मेहनत की और अक्सर ड्यूटी के घंटे या स्थान से बाहर जाकर यह सुनिश्चित किया कि आवेदकों को समय पर उनका पासपोर्ट मिल जाए।

बरेली में बिताए गए मेरे चार वर्ष बिना चुनौतियों के नहीं थे। भारी कार्यभार को संभालने से लेकर कभी-कभी नाराज आवेदकों से निपटने तक, ऐसे दिन आते थे जब दबाव बहुत अधिक महसूस होता था। हालांकि, ऐसे क्षणों में मेरी टीम का सहयोग अक्सर मुझे शक्ति प्रदान करता था जिनके समर्पण, सहयोग और विशेषज्ञता ने सब कुछ बदल दिया। मैं पासपोर्ट कार्यालय बरेली के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आभारी हूं, जिन्होंने निरंतर कार्य दबाव में अपनी निष्ठा, समर्पण और निरंतर मेहनत दिखाई। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे गर्व और संतोष का अहसास होता है कि जो उद्देश्य था, उसे हम हासिल कर पाए। मेरे कार्यकाल के दौरान, हमने पासपोर्ट सेवा अनुभव को बेहतर बनाने के लिए कई नए कदम उठाएं। प्रक्रियाओं को सरल बनाने से लेकर नए अभियानों की शुरुआत जैसे पासपोर्ट कैम्प्स का आयोजन, POPSK का उद्घाटन हमारे प्रयास नागरिकों को प्रभावी,

पारदर्शी और नागरिक केंद्रित सेवाएं प्रदान करने पर केंद्रित थे। बरेली में बिताया गया समय मुझे ऐसी यादों से भर देता है, जिन्हें मैं हमेशा संजोकर रखूँगा। शहर की जीवंत गलियों से लेकर वहाँ के लोगों की गर्मजोशी तक, हर अनुभव ने मेरी व्यक्तिगत और पेशेवर प्रगति में योगदान दिया। बरेली से आगे नए चुनौतीपूर्ण अवसर मिलने पर मैंने सीखी गई बातें और बरेली में क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के रूप में बनाए गए रिश्तों को अपने साथ लिया। यह एक अविस्मरणीय और मानसिक रूप से संतुष्टिप्रद अनुभव था। मैं इस बात के लिए आभारी हूं कि मुझे आम जनों की सेवा करने का अवसर मिला।

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है

मोहम्मद आतिर अंसारी (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

आलस किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। आलसी व्यक्ति जीवन में जल्द ही असफल हो जाता है । आलस व्यक्ति को कामचोर बना देता है और उसमें अनेक अवगुण पनपने लगते हैं। लेकिन आलसी व्यक्ति पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि वह वक्त की अहमियत को नहीं समझता है और ऊंचे - ऊंचे सपने बुनना भली भांति जानता है परंतु उन सपनों को पूरा करने के लिए परिश्रम नहीं करता। यदि सफलता उसके पास भी हो तो उसे पाने के लिए अपना हाथ तक नहीं बढ़ाता है। जिंदगी प्यारी है तो वक्त की कद्र करना चाहिए क्योंकि जिंदगी वक्त से ही बनती है ।

आज का व्यक्ति अपने दुख से इतना दुखी नहीं है जितना कि दूसरे के सुख से दुखी है। वह हमेशा उसकी निंदा करने के लिए बहाने ढूंढता रहता है और यह सोचता रहता है कि उसके इन सुख साधनों का कारण क्या है ? जबकि वह यह नहीं जानता कि यह उसके परिश्रम का फल है । अगर वह भी आलस में पड़ा रहता तो इन सुखों का लाभ नहीं उठा पाता जबकि हर व्यक्ति की सोच यह होनी चाहिए कि वह दूसरे के गुणों को अपनाए और अपने अवगुणों को त्यागे। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की निंदा न करके स्वयं के अवगुणों को तलाशना चाहिए और उन्हें दूर करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। तभी हमारे परिवार, समाज और देश में सुधार आएगा और देश उन्नति करेगा तथा सभी व्यक्ति आदर्श नागरिक कहलाएंगे । अत: हम यह कह सकते हैं कि जीवन के हर मार्ग पर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है ।

बाबू जी

दिनेश सिंह (सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

हमारा देश भारत हमेशा से संत महात्माओं का देश रहा है। यह हमारे देश का सौभाग्य है कि इतने महापुरुष यहां जन्म लेते रहे हैं यहां तक कि विभिन्न देवता भी बार-बार अलग-अलग रूप में इसी देश मे अवतरित हुए हैं। हम लोग भी भाग्यशाली हैं कि हमें इस परमपूज्य भारत माता की गोद में स्थान मिला है। इन महापुरुषों में बहुत से लोगों ने एक बड़े स्तर पर काम किया है जिससे उनकी ख्याति पूरे देश या पूरे विश्व में है। इसके साथ ही बहुत से लोगों ने छोटे-छोटे स्तर पर काम करके अपना एक स्थान बनाया है । इन छोटे स्तर पर काम करने वाले महापुरुषों के काम को कम करके नहीं आंका जा सकता है। उनका योगदान देश की प्रगति में उसी प्रकार है जैसे बूंद-बूंद मिलकर सिंधु बनाता है। देखने वालों को सागर इतना विशाल दिखता है और लोगों को केवल सागर की विशालता इतनी रोचक और विषमयकारी लगती है लेकिन उसको विशाल बनाने वाली बूंद के अपने अस्तित्व को मिटाने पर किसी का ध्यान नहीं जाता है, वैसे ही ये महापुरुष हमारे देश को महान बनाने में अपना योगदान देते रहते हैं और देश को आगे बढ़ाने में वह अपना सर्वस्व चुपचाप देते रहते हैं। उनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता है।

मेरा मानना है कि इन स्थानीय स्तर के मार्गदर्शकों के योगदान का भी वर्णन होना चाहिए और कम से कम उन्हें उनके योगदान के लिए याद जरूर किया जाना चाहिए। यद्यपि यह उन महापुरुषों की लालसा नहीं रहती है फिर भी हमें उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हुए उन्हें यथोचित सम्मान देना चाहिए, इसी प्रकार के एक महापुरुष से मैं आप सभी का परिचय करवाना चाहता हूँ।

उत्तर प्रदेश में एक छोटा सा जिला है 'उन्नाव', जो कि लखनऊ और कानपुर की चकाचौंध के बीच दबा हुआ है। यद्यपि इस पावन भूमि पर राजा राव राम बख्श सिंह (बक्सर) जैसे प्रतापी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी से लेकर चंद्र शेखर आजाद (बदरका, उन्नाव)जैसे विश्व विख्यात बलिदानी तक ने जन्म लिया है। इसी क्रम में कलम के सिपाही सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' की पैतृक जन्मभूमि से लेकर पंडित प्रताप नारायण मिश्र की जन्मभूमि होने का भी गौरव इसे प्राप्त है । इसके अतिरिक्त स्थानीय परम्पराएं राम चरित मानस और अन्य पुराणों में उल्लिखित कई प्रसिद्ध व्यक्तियों जैसे परशुराम, राजा दशरथ, महर्षि वाल्मीकि, माता सीता, लव-कुश, भगवान राम, कृष्ण जी, अश्वस्थामा और श्रवण कुमार को इस महान जनपद के अलग- अलग स्थानों से जोड़ती हैं।

फिर भी मैं आपको इनमें से किसी के बारे में कुछ नहीं बताने जा रहा हूँ चूंकि या तो आप इनके विषय में जानते हैं या गूगल बाबा की कृपा से आप इनमे से किसी के विषय में भी जान सकते हैं । मैं आपका परिचय इसी उन्नाव जनपद के मुख्यालय से लगभग 45 किमी दूर स्थित रूदीखेड़ा नाम के एक छोटे से गाँव में पैदा हुए एक प्रतापी व्यक्तित्व से कराने जा रहा हूं। इनका जन्म सन 1963 में भाद्रपद (जिसको गाँव में भादव) महीने की अमावस्या को हुआ था। माता- पिता ने उनका नाम कुँवर सिंह रखा। कुँवर उसे कहते हैं जो भविष्य में राजा बने।

कुँवर सिंह जी पढ़ने में इतने तेज थे कि उनको कक्षा 2 के बाद सीधे कक्षा 5 में प्रवेश दिया गया। वह भी जन्मतिथि को बढ़ाकर ताकि उम्र नियमों के अनुरूप रहे। वह अपनी पढ़ाई के दौरान हमेशा सबसे आगे रहे। वह अपने गाँव में स्नातकोत्तर और बीएड करने वाले पहले व्यक्ति थे, वह भी तब जब गाँव के परिवेश के अनुरूप उनकी शादी मात्र 17-18 वर्ष की उम्र मे ही कर दी गई थी।

कम उम्र में उन्हें इस बात का अहसास हो गया था कि उस क्षेत्र में अच्छी शिक्षा की कोई उचित व्यवस्था नही है अत: उन्होंने अपने ही एक पैतृक प्राइवेट विद्यालय को आधुनिक रूप दिया और उसे आगे बढ़ाने में अपनी जवानी के कई साल खपा दिए और वह विद्यालय उनके प्रयासों से उस समय क्षेत्र का सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक संख्या वाला प्राइवेट विद्यालय बन गया। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है उस समय उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक काम किया और बहुत ही कम शुल्क में बच्चों को अपने घर के नजदीक ज्ञान अर्जन करने की सुविधा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस दौरान शिक्षा में ट्यूशन और नकल का बोलबाला हुआ करता था, वह चाहते तो अपनी ख्याति का अनुचित लाभ लेकर आर्थिक लाभ ले सकते थे लेकिन वह ट्यूशन और नकल दोनों के सख्त खिलाफ थे। उनका उद्देश्य सर्वव्यापक और समतामूलक शिक्षा देना था। उन गरीब लोगों के बच्चों का हक न मारा जाए और उन्हें समान अवसर मिले जो कि ट्यूशन नहीं पढ़ सकते थे इसीलिए वह ट्यूशन के इतने घोर विरोधी थे कि उन्होंने अपने बच्चों को भी ट्यूशन पढ़ने नही दिया। जिस विद्यालय का संचालन वह कर रहे थे उसमें न जाने कितने बच्चे नि:शुल्क पढ़ते थे।

उनका जन्म ही समाज में सुधार लाने और लोगों को समृद्ध करने के लिए हुआ था। इन्हीं कारणों से उनको आसपास के लोगों का अपार प्रेम मिला और वह उस क्षेत्र में बाबू जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए। इस बीच उनके पिता जी जो कि ग्राम प्रधान थे उनकी उम्र ढलने की वजह से आम लोगों ने बाबू जी से अनुरोध किया कि आप की जरूरत समाज को है, तो बाबू जी से नही रहा गया और वह गांव में प्रधान पद की शोभा बढ़ाने लगे। उन्होंने प्रधान रहते हुए भी समाज को अपने पास से ही कुछ न कुछ दिया। गरीबों को मिलने वाली सुविधाओं का लाभ उन तक कैसे पहुंचे इसके लिए वह लगातार प्रयासरत रहते थे। उन्होंने गाँव की कच्ची सड़कों को पक्की करवाया तथा सरकारी आवास योजनाओं का लाभ उन सैकड़ों गरीब लोगों तक पहुंचाकर पक्के मकान के उनके सपनों को साकार किया। ग्राम समाज के पास खाली पड़ी भूमि को उन जरूरतमंदों को आवंटित किया जिनके पास भूमि नही थी। वह हर व्यक्ति के सुख-दुख में हमेशा साथ खड़े रहते थे और समाज से अपने लिए बिना किसी अपेक्षा के वह अपना सारा तन, मन और धन समाज के लिए समर्पित रखते थे। इन्हीं कारणों से वह लगातार कई बार अविजित रहते हुए ग्राम प्रधान रहे तथा गाँव की समृद्धि में अपना लगातार योगदान देते रहे।

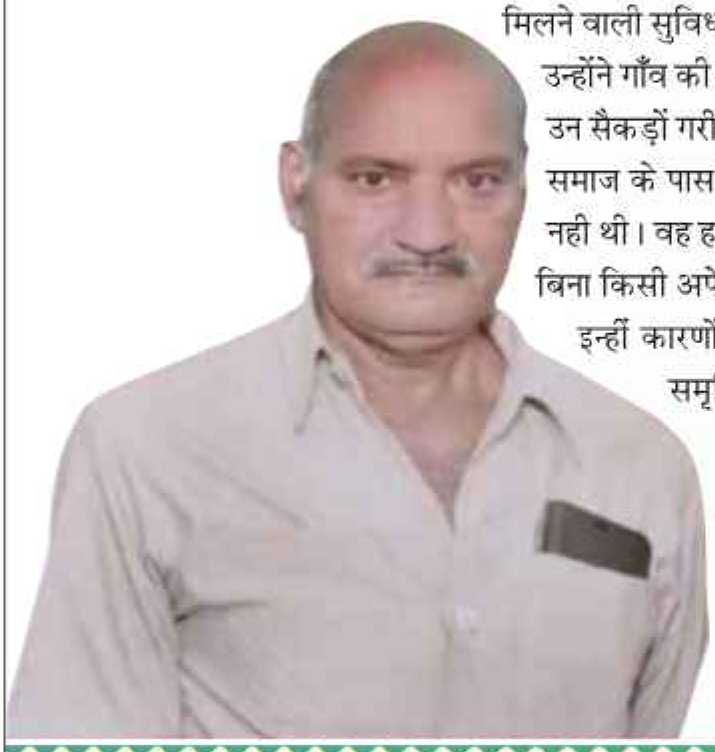

समाज को हमेशा कुछ देने के लिए ही वह बने थे। उस क्षेत्र में कोई भी धार्मिक कार्य होता था तो उसमें उनका सदैव बड़ा योगदान रहता था। साधु- संतों का समागम उनको बहुत प्रिय था। कोई भी साधु उस क्षेत्र से गुजरता था तो वह बाबू जी के यहाँ रात्रि विश्राम जरूर करता था और बाबू जी बड़ी श्रद्धा भाव से उनका स्वागत सत्कार किया करते थे और विदा करते

समय संतों को यथा संभव दान देकर ही विदा करते थे।

वह समाज में व्याप्त जाति प्रथा के सर्वदा खिलाफ थे, उनका उद्देश्य समाज से गरीबी को दूर करने में अपना योगदान देना था। उसके लिए वह अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते थे। इसमें जाति या धर्म बीच में नही आता था। किसी भी गरीब के घर शादी–ब्याह हो तो उसको हर प्रकार की मदद करना उनके स्वभाव में था। एक बार उनकी ग्राम समाज के एक गाँव में रह रहे कुछ मुस्लिम परिवारों ने उनसे कहा कि उनके पास कब्रिस्तान के लिए के लिए भूमि नहीं है तो उन्होंने उनको अपनी व्यक्तिगत भूमि का एक टुकड़ा दान में दे दिया। अब आज के समय में जहां लोग एक फिट जमीन के लिए मारकाट कर लेते हैं वहाँ भूमि का टुकड़ा दान में देना, ऐसा काम केवल बाबू जी ही कर सकते थे।

गाँवों मे आज भी आपसी झगड़े सुलझाने के लिए आसपास के कुछ सम्मानित लोगों को बुलाकर पंचायत करने की प्रक्रिया अपनाई जाती है और पंचायत में सर्वमान्य फैसला होने पर उसी समय झगड़े का निपटारा हो जाता है। लोगों के फैसले कर उनके झगड़े सुलझाने के काम में बाबू जी को महारत हासिल थी। इसलिए आसपास के 30–40 गांवों तक भी आवश्यकता पड़ने पर लोग उनको बुलाते थे कि बाबू जी आकर तटस्थ और सही फैसला करेंगे और उनके अंदर पता नहीं क्या जादू था कि अधिकतर मामलों में दोनों या सभी पक्ष उनके निर्णय से सहमत हो जाते थे और खुशी–खुशी उसको मान लेते थे। कई बार तो स्थिति की जटिलता को भांप कर पंचायत में आए सब लोग फैसला करने से पीछे हटने लगते थे, तब लोग अंतिम आस के रूप में बाबू जी की तरफ देखते थे और बाबू जी कभी भी उनको निराश नहीं करते थे। इस तरह वह समाज के उन लोगों का कोर्ट कचहरी में लगने वाला संभावित समय और पैसा तो बचाते ही थे साथ ही आपसी सौहार्द बनाए रखने का काम भी कर देते थे। सबको साथ ले चलने का उनका बहुमूल्य गुण था। उनके इन्हीं गुणों के कारण गाँव में बड़े–बुजुर्ग कहते थे कि बाबू जी को सांप और बिच्छू एक ही टोकरी में रखने में महारत हासिल है।

उनका जीवन वहाँ रह रहे आसपास के लोगों के लिए प्रेरणाश्रोत बन गया। बाबू जी का जीवन इतना विशाल है और ऐसी न जाने कितनी अच्छाइयों एवं सच्चाईयों से भरा है कि उनके जीवन पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। लेकिन अब यह बताते हुए कि बाबू जी कोई ओर नही मेरे ही बड़े भाई थे और वह बाबू जी के नाम से इतने प्रसिद्ध थे कि हम लोग भी उन्हें भैया न बुलाकर बाबू जी ही कहते थे। वह मेरे गुरू भी थे और प्रेरणाश्रोत तो हम जैसे असंख्य लोगों के थे । वही मेरे आदर्श भी हैं । वह मेरे लिए सदैव पिता तुल्य रहे हैं । यह मेरा सौभाग्य है कि मैं उनका छोटा और प्रिय भाई हूँ । कहते हैं मानव का जीवन लंबा हो न हो, विशाल जरूर होना चाहिए । दुर्भाग्य से यह बात बाबू जी पर भी लागू हो गई। शायद ईश्वर को भी स्वर्ग में उनकी जरूरत जल्दी पड़ गई और हम लोगों के जीवन का वह काला दिन 3 अगस्त 2024 को आया जब हम सबके प्रिय बड़े भाई श्री कुँवर सिंह (बाबू जी) इस सांसारिक जीवन से विदा लेकर अचानक से हम सबको छोड़कर चले गए। बाबू जी, आपसे इतनी ही शिकायत है कि आपको इतनी जल्दी नहीं जाना चाहिए था। आपकी जरूरत हम परिवार जनों के साथ पूरे समाज को भी थी। आप जैसा न कोई था और शायद न कोई होगा । बाबू जी आप हमेशा जीवित रहेंगे ! हमारे दिलों मे, हमारी यादों मे, हमारे सामाज में और हमारे जीवन के उदाहरणों में।

आप जैसा तो कोई हो नहीं सकता लेकिन कोशिश करेंगे कि आप द्वारा प्रस्तुत किए गए आदर्शो और उदाहरणों से जीवन में सीखकर आगे बढ़ें और अपने परिवार तथा समाज का नाम आगे ले जाने में योगदान देते रहें।

अश्रूपूरित श्रद्धांजलि बाबू जी ! बाबू जी ! अमर रहें।

कुंभ नगरी प्रयाग: आस्था और भव्यता का अनुभव

श्रीश श्रीवास्तव (सहायक अधीक्षक)

जरा सोचिए, जहां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती एक साथ मिलती हैं, वह स्थान कितना पवित्र और अद्भुत होगा। हाल ही में मुझे कुंभ नगरी प्रयाग जाने का अवसर मिला, और वहां का अनुभव इतना अनोखा और दिव्य था कि उसे शब्दों में बयां करना आसान नहीं है। जैसे ही मैं संगम के पास पहुंचा, चारों तरफ आस्था और विश्वास की लहरें महसूस हुई। लाखों लोग गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम में स्नान कर रहे थे। हर किसी के चेहरे पर एक अद्भुत शांति और खुशी झलक रही थी।

मेले का माहौल बिल्कुल अलग था। साधु-संतों के अखाड़े, नागा साधुओं की अद्भुत उपस्थिति, और जगह-जगह हो रहे भजन-कीर्तन ने माहौल को बेहद पवित्र बना दिया था। शाम के समय गंगा आरती का दृश्य देखते ही बनता था। जलते हुए दीप, मंत्रों की गूंज और आरती के साथ बहती गंगा की लहरें मन को शांति और ऊर्जा से भर देती थी।

इस बार कुंभ मेले में सरकार ने श्रद्धालुओं की सुविधाओं का खास खयाल रखा था। संगम तट के आसपास स्वच्छता का विशेष ध्यान दिया गया था। जगह-जगह स्वच्छ शौचालय बनाए गए, जिनका रख-रखाव बहुत अच्छा था। ठंड के मौसम में गर्म पेयजल, साफ पीने का पानी और मेडिकल कैंप्स की व्यवस्था ने श्रद्धालुओं को काफी सहूलियत दी। हर ओर सहायता केंद्र और प्रशिक्षित स्वयंसेवक मदद के लिए तत्पर थे।

भंडारों की व्यवस्था ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया। दिन-रात मुफ्त में शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन हर किसी के लिए उपलब्ध था। यह न केवल सेवा का प्रतीक था, बल्कि मानवता की बड़ी मिसाल भी थी। ठहरने के लिए सरकार ने 'टेंट सिटी' बनाई थी, जो आधुनिक सुविधाओं से लैस थी और सुरक्षित भी। परिवहन के लिए विशेष बस और ट्रेन सेवाओं का प्रबंध किया गया था, जिससे लाखों श्रद्धालु आसानी से मेले तक पहुंच सके।

मेले में खाने-पीने की चीजें, हस्तशिल्प, और रंग-बिरंगी झांकियां भी देखने लायक थीं। हर तरफ भारतीय संस्कृति और परंपरा की झलक थी। मैंने वहां अलग-अलग पकवानों का स्वाद लिया और संगम की मिट्टी से बनी सुंदर वस्तुएं खरीदी।

कुंभ मेला सिर्फ एक धार्मिक आयोजन नहीं है, यह मानवता को जोड़ने का उत्सव है। जाति, धर्म और भाषा की सीमाओं को पीछे छोड़, यहां हर कोई संगम के पवित्र जल में एक समान दिखता है।

प्रयागराज की कुंभ नगरी ने मेरी आत्मा को छू लिया। वहां का अनुभव न केवल आंखों के लिए, बल्कि दिल और आत्मा के लिए भी बेहद खास था। अगर कभी मौका मिले, तो इस पावन नगरी की यात्रा जरूर करनी चाहिए। यह जीवनभर याद रहने वाला अनुभव है।

महर्षि वाल्मीकि का आध्यात्मिक रूपांतरण

गिरीश चन्द्र (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

महर्षि वाल्मीकि, जिन्हें पहले रत्नाकर के नाम से जाना जाता था, एक भयंकर डाकू थे जो लूटपाट और हिंसा में लिप्त रहते थे। उन्हें नैतिकता और अध्यात्म का कोई ज्ञान नहीं था। एक दिन उनकी भेंट महर्षि नारद से हुई। नारद ने उनसे पूछा कि जिनके लिए वह पाप कर रहे हैं, क्या वे उनके पापों का भार साझा करेंगे ? जब रत्नाकर ने अपने परिवार से यह प्रश्न किया, तो उन्हें यह जानकर आघात लगा कि कोई भी उनकी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं था। इस सत्य ने उनकी आत्मा को झकझोर दिया, और वे नारद जी के चरणों में गिरकर मार्गदर्शन मांगने लगे।

नारद जी ने उन्हें भगवान राम के नाम का जाप करने की सलाह दी। रत्नाकर सही उच्चारण नहीं कर सके, इसलिए उन्हें मरा, मरा जपने को कहा गया, जो धीरे-धीरे 'राम-राम' बन गया। कठोर तपस्या में लीन, वे वर्षों तक स्थिर रहे, और उनके चारों ओर दीमक का टीला बन गया। जब वे तपस्या से उठे तो एक दिव्य संत के रूप में पुनर्जन्म लिया और उन्हें 'वाल्मीकि' नाम मिला।

भगवान की कृपा से प्रेरित होकर। उन्होंने रामायण की रचना की। जिसमें श्रीराम के जीवन और गुणों का वर्णन किया गया। उनकी भक्ति और इस महान ग्रंथ ने उन्हें अमर बना दिया। वाल्मीकि की यात्रा हमें सिखाती है कि सच्चे परिवर्तन की संभावना हमेशा बनी रहती है। यदि हम श्रद्धा, ज्ञान और ईश्वरीय कृपा का सहारा लें। उनका जीवन हमें सच्चाई और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

हाँ यही है जीवन की सच्चाई

नीतू वर्मा पुत्री हरीश कुमार

कभी तो धूप है जीवन,
कभी तो छाँव है जीवन,
कभी आशा, कभी मुश्किल,
कभी संग्राम है जीवन ।
अगर जीवन की राहों पर, लाकर प्रेम के मोती।
तुम्हें चलना नहीं आया, हमें थमना नहीं आया।
कभी अनुकूल अपने सब, कभी प्रतिकूल सब मेरे ।
कहीं पर लुट गयी बस्ती, कहीं पर बस गये डेरे।
मिटा के अस्क नयनों से, सजा मुस्कान अधरा पर ।
तुम्हें हँसना नहीं आया, हमें रोना नहीं आया।
यही जीवन की एक छोटी सी, रह गयी अभिलाषा ।
देखना था जो जीवन में, वो मैं कभी देख नहीं पाई।
यही जीवन की हैं सच्चाई, यही जीवन की है कठिनाई।
रह गयी कुछ शिकायत, इस जीवन से,
कभी न दे किसी को इतनी कठिनाई।
थक गई मैं अब इस जीवन से
अब इससे बड़ी नहीं कोई कठिनाई।
हाँ यही है जीवन की सच्चाई ।

बाल्यावस्था

छाया चौबे पतीजी श्री संजय कुमार पाण्डेय

हे वत्स ! तेरे मुस्कान के खातिर, लोगों ने संसार लुटाए ।
तेरी एक मुस्कान को पाकर, खुदा भी खुद धन्य हो जाए।।

बाल कृष्ण की लीला जग में, सबसे अद्‌भुत और कमाल है।
राम के पग की पैंजनियां भी, करती हरदम ही धमाल है।।

चांद भी मामा बने तुम्हारा, बिल्ली मौसी बन जाए।
शत्रु नहीं है कोई तुम्हारा, सबसे प्रेम का रिश्ता ही पाए।।

काम का बोझ न तुम्हें डराए, न ही चिंता कोई सताए ।
मस्त – मौला बने फिरते तुम, नैनन भृकुटी बाण चलाए ।।

मार – पीट भले हो जाए, मित्रों का संग छूट न पाए ।
ऐसा ही हो स्वभाव हमारा, हमको भी ये सीख सिखाए ।।

कौन है अपना कौन पराया, जाने क्या कुछ लोग कह जाए।
बोध नहीं धरते इन सबका, तुम अबोध बालक कहलाए ।।

ईश्वर का वरदान है बालक, सबमें कान्हा का रुप दिखाए।
माखन चोरी करके भी तुम, अधर कुटिल मुस्कान सजाए। ।

बाल्यावस्था की ये अवधि, सबसे ऊपर, सबसे अद्‌भुत ।
करते नही परवाह किसी की, हरदम खोए रहते सुध-बुध ।।

हम भी फिर से बालक बनकर, अपना कुटिल स्वभाव भुलाए।
शिशुवत आचरण बने हमारा, नारायण में हम मिल जाए ।।

जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है

आकांक्षा सक्सेना पत्नी श्री विकान्त श्रीवास्तव

सुरमई सा शीतल स्पंदन, करे धरा वर्षा का वंदन
तृप्त हो उठी भूमि जिससे, प्रकृति भी निहाल है।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

फैली है खुशबू सौंधी सी मन को मोहित है कर लेती
इत्र न कोई इससे बेहतर ये खुशबू भी बवाल है।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

गर्ज उठा है मेघ मण्डल, जीव छिप गए भय से अंदर,
टिक पाए इस गर्जना में कोई, किसी की क्या मजाल है।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

नभ से पानी मोती बरसें जीव सभी इस दिन को तरसें
पात से पात अठखेली करते, ये मोती भी बेमिसाल हैं।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

प्रफुल्लित हो उठा धरा का दामन, पुष्पों से सज गया चमन,
रंगों ने सुंदर चाप बनाया, इंद्रधनुष ये विशाल है।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

मोर नृत्य करते मनभावन, कहते देखो आया सावन,
आसमान है रंगा महावर, हर ओर फैला गुलाल है।
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

बचपन के वह दिन सुहाने,
कागज की कश्ती और छुट्टी के बहाने
क्या लौट पायेंगे कभी ? आपका क्या खयाल है ?
जरूर ये बारिश की बूंदों का कमाल है।

दक्षिण भारत के केरल राज्य के कुछ प्रसिद्ध जलप्रपात

विक्रांत श्रीवास्तव (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

केरल न सिर्फ भव्य समुद्र बल्कि अनेकों आकर्षक जलप्रपातों, जिन्हें हम सरल भाषा में 'पानी के झरने' कहते हैं, के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां के शानदार जलप्रपात वर्ष में कभी भी पिकनिक या घूमने फिरने के लिए सबसे सुंदर जगहों में से एक हैं। केरल के मनमोहक जलप्रपात ऐसे नजारे पेश करते हैं कि आपकी आँखें बिना पलकें झपकाए इनकी शान को देखते कभी नहीं थकेंगी।

इनमें से कुछ जलप्रपातों के बारे में मैं आज आपको बताने जा रहा हूँ, जिनकी खूबसूरती का मैं खुद साक्षी हूँ और ऐसे अद्भुत नजारे देखने से मन प्रसन्न हो उठे।

अथिराप्पिल्ली जलप्रपात:-

यह केरल राज्य का सबसे प्रसिद्ध एवं निर्मल झरना है। यह कोचीन शहर से लगभग 70 किलोमीटर दूरी पर त्रिशूर जिले में स्थित है। पर्यटकों के बीच यह एक पिकनिक स्थल के रूप में काफी लोकप्रिय है। पक्षी-प्रेमियों के लिए यह पसंदीदा जगह है क्योंकि यहां कई तरह के प्रवासी और स्थानिक पक्षी आते हैं। बहुप्रसिद्ध मूवी 'बाहुबली' के कुछ दृश्यों को यहां पर फिल्माया गया था। जिसके बाद से यह स्थल और भी ज्यादा लोकप्रिय हो गया है। यहां से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर वाजचल जलप्रपात भी स्थित है, जो एक और स्मरणीय स्थल है। वे अपने लुभावने दृश्य और समृद्ध स्थानिक जीवों के लिए जाना जाता है।

पालरुवी जलप्रपात:-

जिन लोगों को ट्रैकिंग करने का शौक हो, उनके लिये इस झरने तक पहुंचना बहुत रोमांचक होगा, क्योंकि जंगल के अंदर ट्रैकिंग करके ही यहां पहुंचा जा सकता है। यह कोल्लम जिले के शेंदुरूनी वन्यजीव अभयारण्य में स्थित है। 'पालरुवी' एक मलयालम शब्द है जिसका अर्थ 'दूध की सफेद धारा' है। 300 फीट की ऊंचाई से बहते इस झरने का पानी एकदम दूध सा शुद्ध सफेद दिखता है, जो अपने नाम को पूर्णतया साकार करता है।

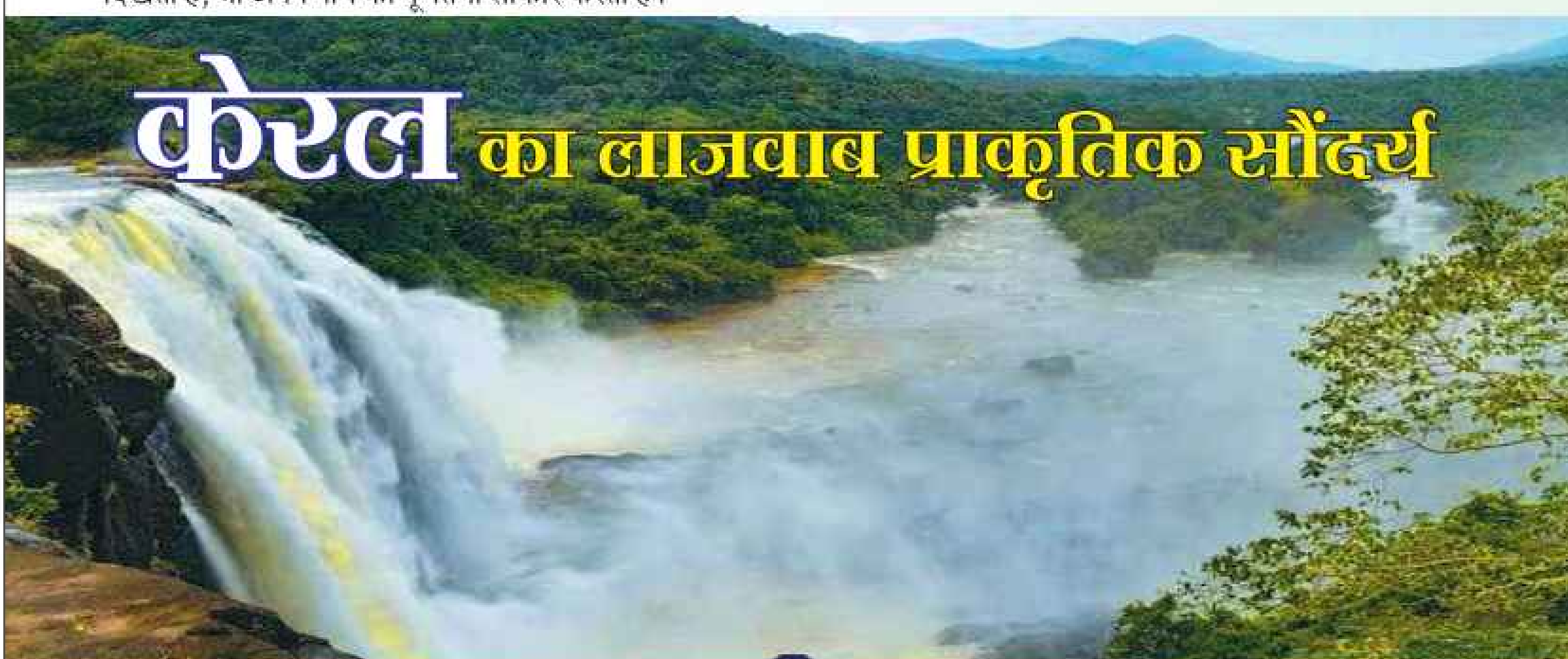

अरीक्कल जलप्रपातः -

यह जलप्रपात कोच्चि शहर से लगभग 35 किमी दूर पिरावोम-मुवत्तुपझा मार्ग पर पंबक्कुडा पंचायत में स्थित है। यहां पर चांदी सा झिलमिलाता पानी लगभग 100 फीट नीचे से गिरता देखना सबका मन मोह लेता है और पृष्ठभूमि में जंगल और रबर के बागान हैं, जो देखने योग्य है। वास्तव में यहाँ की ताजी हवा और कभी-कभार होने वाली बारिश के साथ पर्यावरण की शांति का आनंद लेना अपने आप मे एक अलग ही समा बाँध देता है। इन सभी विशेषताओं के कारण यह यात्रियों के लिए एक अच्छा गंतव्य बन गया है। अरीक्कल जलप्रपात की यात्रा का सबसे अच्छा समय जून-जुलाई के बरसात के मौसम के दौरान होता है, जब जलप्रपात चरम जल प्रवाह से टकराता है।

थोम्मनकुथु जलप्रपातः-

यह जलप्रपात केरल राज्य के इडुक्की जिले के थोडुपुझा तालुका में स्थित है। यह राज्य में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और पर्यावरण पर्यटन के प्रमुख केंद्रों में से एक है। यह पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी भाग में स्थित है। थोम्मनकुथु जलप्रपात कोई एकल जलप्रपात नहीं है बल्कि 5 किमी की दूरी पर 12 झरनों की श्रृंखला है। थोम्मनकुथु जलप्रपात जंगल में स्थित सात सीढ़ी वाला जलप्रपात है जहाँ जंगलों के बीच से 12 किमी की ट्रैकिंग भी संभव है। झरने की ऊंचाई लगभग 1500 मीटर है और झरने के तल पर एक पूल है, जो इस जगह को एक बहुत ही अनोखा एहसास देता है। यहाँ कोई भी जंगल की रसीली सुगंध के साथ पहाड़ी जंगलों के प्राचीन इलाकों में रोमांचक ट्रैकिंग का आनंद ले सकता है। ट्रैकिंग के दौरान पर्यटक बंदरों, पक्षियों और अन्य छोटे जानवरों को देख सकते हैं जो जंगल का हिस्सा हैं। वे जंगल में चयनित स्थान पर उपलब्ध कैंपिंग सुविधा भी ले सकते हैं।

निष्कर्षः-

केरल के झरने, चाय के बगान, पहाड़ी क्षेत्र, घने जंगल इन सभी वजहों से सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले पर्यटन स्थलों में से एक हैं। कुछ मौसमी झरनों को छोड़कर, केरल के सभी झरनों में पानी की गर्जना सुनाई देती है । ये प्राकृतिक नजारे किसी भी व्यक्ति का मन मोह लें। ज्यादातर झरने प्लास्टिक-मुक्त क्षेत्र हैं। यह शाम 5 बजे तक बंद हो जाते हैं। इन जगहों पर जाते समय, स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें और उचित सावधानी बरतें।

मेरे प्रिय प्रधानमंत्री, मेरा अनुभव

संसार में सबसे प्रसिद्ध भारत के हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हैं सर्वप्रथम 2014 में हमारे भारत देश की जनता ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकारा। उसके बाद देश के ऐस-ऐसे फैसले हुए जिस पर हम सबको गर्व है। मोदी जी की प्रसिद्ध देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैली हुई है। 26 अप्रैल 2024 को जब वह बरेली रोड शो में आए तब हमने राजेंद्र नगर में साक्षात दर्शन किए। उस दिन हम ठीक सायं 6:00 बजे कार्यालय से निकलकर राजेंद्र नगर में पहुंचे वहां लोगों में इतना हर्ष उल्लास व उत्साह था कि मानो वह अपने प्रिय नेता के दर्शन को आए हों। इतनी भीड़ थी कि जैसे कोई नेता नहीं बल्कि भगवान आए हों। चारों तरफ शोर हो रहा था मोदी-मोदी की आवाज से संपूर्ण राजेंद्र नगर ही नहीं बल्कि पूरी बरेली गूंज रही थी। लगभग 2 घंटे के इंतजार के बाद जब मोदी जी रात्रि 8:00 बजे रोड शो में आए तो जनता की खुशी का ठिकाना न रहा। हम भी खुशी में मोदी-मोदी चिल्ला रहे थे, तब अचानक उनकी नजर से हमारी नजर मिली तो ऐसा लगा मानो हमने दुनिया की सबसे कीमती चीज प्राप्त कर ली। उस घटना को जिंदगी भर भूल नहीं सकता। यह घटना मेरी जिंदगी की सबसे प्रिय घटना है और यही मेरा अनुभव है।

श्रेय कृष्ण सक्सेना (डाटा एंट्री ऑपरेटर)

कुछ पग तुम भी साथ धरो

जीवन का जब सफर एक है, कुछ पग तुम भी साथ धरो।
जीवन में पूर्णता आ जाए, कुछ श्रम तुम भी साथ करो ।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

मात-पिता सब छोड़कर आई, रिश्ते-नाते तोड़कर आई।
मेरी सोहबत पाने खातिर, कुछ तुम भी परित्याग करो।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

पग में काँटे गर चुभ जाए, डग में लगे पाँव गर डिगने।
हौले से मेरा हाथ पकड़कर, कुछ पल मेरे संग चलो ।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

शिव ने सती को किया समाहित, अर्धनारीश्वर बन बैठे।
आधे की शुमार नहीं करती, कुछ 'मैं' को 'तुम' तुल्य करो।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

राम संग चल पड़ी जानकी, मन में कोई संकोच न था।
सीता की जब बारी आई, नि:संकोच संगत तो धरो ।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

राधा-कृष्ण की जोड़ी देखो, कितना अनुपम, अद्वितीय हैं।
राधा बन गई कृष्णा देखो, तुम भी कुछ राधे रुप धरो ।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

पति तो रक्षक कहलाता है, पत्नी भी वल्लभा कहलाई।
पौरुष मद को त्यागकर देखो, तुम राधावल्लभ रुप धरो।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

मनु सतरुपा साथ मिले तो, सृष्टि की रचना कर बैठे ।
हम भी नव निर्माण कर सकते, जो तुम मेरा संग धरो।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

जीवन के दो पहिये हैं हम, साथ चले तो काम बने ।
धक्का देना छोड़कर देखो, पथ को सरल, सुगम्य करो।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

अपना मिलन ऐसा हो कि, नव क्षितिज का निर्माण करे।।
मैं भी धीर धरु धरती सी, तुम भी अम्बर सा रुप धरो ।।
कुछ पग तुम भी साथ धरो।

नीरा पाण्डेय
पत्नी श्री संजय कुमार पाण्डेय

कुंभ और महाकुंभः एक पवित्र संगम

योगिता बिष्ट पुत्री श्री गिरीश चन्द्र बिष्ट

कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है, जो भारत के चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित होता है। यह ग्रहों की स्थितियों के आधार पर मनाया जाता है और प्रत्येक स्थान पर हर 12 वर्षों में आता है। इसके अलावा प्रत्येक 6 वर्षों में अर्ध कुंभ और हर 144 वर्षों में प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन होता है। यह पर्व हिंदू पौराणिक कथाओं से जुड़ा है और समुद्र मंथन की कथा पर आधारित है, जिसमें देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया था।

कथाओं के अनुसार जब अमृत कलश (कुंभ) प्राप्त हुआ, तो देवताओं और असुरों के बीच इसे पाने के लिए युद्ध छिड़ गया। अमृत की रक्षा के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया और अमृत कलश को लेकर आकाश में उड़ चले। इस दौरान अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में गिरीं, जिससे ये स्थान पवित्र बन गए। यही स्थान कुंभ मेले के आयोजन स्थल बने, जहां करोड़ों श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान करके अपने

पापों से मुक्ति पाने और मोक्ष प्राप्त करने की कामना करते हैं। महाकुंभ जो हर 144 वर्षों में प्रयागराज में मनाया जाता है, इसे सबसे पवित्र माना जाता है। इस आयोजन में संत-महात्मा, साधु-संत और भक्त विश्वभर से आते हैं, जिससे यह एक विशाल धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगम बन जाता है। कुंभ मेला केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आस्था, भक्ति और एकता का प्रतीक है, जहां लोग आशीर्वाद और आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आते हैं।

यह दिव्य शक्ति की जीत और अच्छाई-बुराई के संघर्ष का प्रतीक भी माना जाता है।

चाय

मोनिका शुक्ला पत्नी श्री संदीप शुक्ला

नींबू वाली चाय
पेट घटाए
अदरक वाली चाय
खराश मिटाये
मसाले वाली चाय
इम्यूनिटी बढ़ाए
मलाई वाली चाय
सौंदर्य दिखाए
सुबह की चाय
ताजगी लाए
शाम की चाय
थकान मिटाए

दुकान की चाय
मजा आ जाए
पड़ोसी की चाय
व्यवहार बढ़ाए
मित्रों की चाय
संगत में रंगत ले आए
पुलिस की चाय
मुसीबत से बचाए
अधिकारियों की चाय
फाइल बढ़ाए
नेताओं की चाय
बिगड़े काम बनाए

विद्वानों की चाय
सुंदर विचार सजाए
कवियों की चाय
भावनाओं में बहाए
रिश्तेदारों की चाय
संबंधों में मिठास ले आए
चाय,चाय,चाय
सबके मन को भाए

धर्म

अनुराग दुबे 'अंशुल' (पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

धर्म की नकली आड़ लिए हो, कहीं भी तंबू गाड़ लिए हो
कोई खुद को संत बतावे, कोई कहीं बाबा बन जावे
दिखा रहे हाथों की सफाई, कुछ तो शर्म करो मेरे भाई।

अंधविश्वास की दुकान खुली है, ढोंग-पाखंड की दवा मिली है
तुम लोगों का धंधा है ये, सीधी सादी जनता है ये
समझे ना तेरी चतुराई, कुछ तो शर्म करो मेरे भाई।

कोई मंच पर पढ़ता पर्चे, किसी की तो अरजी के चर्चे
चरण धूल लेने के कारण, कितने मर गए बूढ़े बच्चे
बंद करो आंसू की कमाई, कुछ तो शर्म करो मेरे भाई।

बढ़ती उम्र का एहसास

संजय कुमार पाण्डेय (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक)

उम्र के हो चले हैं पक्के, कच्चों वाली बात कहाँ है!
बालों में है छाई सफेदी, बच्चों वाली बात कहाँ है!

ओल्ड इज गोल्ड सभी कहते हैं, बात भी है पते की!
पारस पर घिस कर हम चमके, हीरे में वो बात कहाँ है!

अधोमुखी नही उच्छवास हम, अधमर्ण नही उत्तमर्ण हैं हम!
कृत्य निभाये धर्म समझकर, आज कल वो फर्ज कहाँ है!

आधी उम्र हम पार कर गये, आँखों पर चुन चश्मा!
दिल से बने रहे हम बच्चा, अधेड़ों वाली बात कहाँ है!

सत्कर्मों पर ध्यान टिकाएं, खाली कभी न रह पाएं!
कीर्तन पर जब नृत्य करें तो, डिस्कों में वो जान कहाँ है!

अपने बच्चे को हम पालें, इनके बच्चे भी पालेंगे!
दादी-नानी का ओहदा पाये, इससे बढ़कर सौगात कहाँ है!

काम-काज के नहीं रहे हम, गवर्नमेंट हमको ये जतलाती!
पद - निहत भले हो जायें, पर डरने वाली बात कहाँ है!

जीवन पथ की दौड़ में हरदम, बने रहे हम प्रतिभागी!
आज भी मन दौड़ाये हमको, घुटनों में वो जान कहाँ है!

शुगर या कॉलेस्ट्राल बढ़ा हो, बी.पी हो या हृदयगति हो!
योगा और मेडिटेशन है तो, मरने वाली बात कहाँ है!

नींद भी थोड़ी दूर हो चली, पास नही आता कोई!
खुली आँखो से जो हम देखे, सपनों वो बात कहाँ है!

घर परिवार या गली-मोहल्ला, सबमें हम सौहार्द बढ़ाते!
बढ़ने लगी है उम्र, घटने वाली बात कहाँ है!

बात लगी हो अगर पते की, सबके मन को भाई हो!
हौंसला-अफजाई करने हेतु, तालियों की आवाज कहाँ है!

रिश्ते सिमट गए मोबाइल में

कभी-कभी खो जाती हूँ,
बचपन की यादों में
देखकर डाकिया को
चेहरे पर छा जाती थी मीठी मुस्कान।
टूटे-फूटे शब्दों में लिखी
अपनों की चिट्ठी, जो याद दिलाती थी आंगन की मिट्टी।
सात समंदर पार पहुंचती थी जब बहन की राखी,
बांधते ही कलाई पर भाई की चौड़ी हो जाती थी छाती।
सीमा पर से फौजी बेटे का जब आता था तार,
बूढी माँ यू झूमती जैसे पा लिया संसार।

बस कदमों का फैसला था
दिलों के तार बनते थे
आज फोन के तार तो हैं
मोबाइल के टॉवर तो हैं
लेकिन पड़ गई दरारें दिल में
रिश्ते सिमट गए मोबाइल में

साक्षी सक्सेना पुत्री श्रीमती मीरा सक्सेना

मेरे माता-पिता मेरी जन्नत

विशाल पुत्र श्री राम बाबू

माता-पिता के लिए, जितना कहूँ उतना कम है। कहते हैं बच्चे का पहला प्यार पहले अध्यापक माता-पिता ही होते हैं। सबसे पहले बच्चे अपने माता-पिता से ही सीखते हैं कि क्या सही है क्या गलत। माता-पिता ही हमारे मार्गदर्शक होते हैं। माता-पिता ही हमारे पहले और सबसे अच्छे दोस्त भी होते हैं। वह हमारी हर कही-अनकही बात को समझते हैं। कहते हैं कि भगवान एक समय में हर बच्चे के पास नहीं हो सकते थे इसलिए उन्होंने 'माँ' बनाई। माता-पिता खुद भूखे-प्यासे रहकर बच्चों को कभी भूखा नहीं सोने देते हैं, खुद परेशानी उठा लेंगे लेकिन अपने बच्चों को कभी परेशान नहीं देख सकते। अपने सारे सपने, सारी इच्छाएँ मारकर अपने बच्चों के हर सपने को पूरा करने की कोशिश करते हैं। इसलिए माता-पिता को भगवान का दूसरा रूप भी कहते हैं। माता-पिता को शब्दों में बाँधना असम्भव है उनके प्यार का सागर इतना महान होता है कि माता-पिता के लिए शब्द कम पड़ गये, स्याही खत्म हो गई।

किसी ने सच ही कहा है कि अगर भगवान को खुश करना है उनकी सेवा करनी है, तो माता-पिता को खुश रखो उनकी सेवा करो, भगवान अपने-आप ही खुश हो जायेगें।

लोग कहते हैं कि आज माँ का दिन है, आज पिता का दिन है। मैं तो कहता है कि अरे वो कौन-सा दिन है जो माता-पिता के बिन है , अरे वो कौन-सा दिन है जो माता-पिता के बिन है, अरे वो कौन-सा दिन है जो माता-पिता के बिन है ।

मेरे ताऊ व्यग्र जी

जन्म हुआ गांव में, गांव में ही रहते थे।
खेलते थे मिट्टी में, मिट्टी से ही पढ़ते थे।
पांच किलोमीटर पैदल पढ़ने को जाते थे।
गांव रसूल में यह दोनों बच्चे सबको भाते थे।
मनीराम और व्यग्र जी दोनों साथ बरेली आए।
दोनों भाई ने मिलकर मेहनत से करी पढ़ाई।
इंटर और बीटीसी करके मेहनत रंग लाई।
दोनों भाई बने मास्टर खुशियों के दिन आए।
दोनों भाई शहर बरेली साथ-साथ रहते थे।
भैया भाभी आपस में यह सब खुश रहते थे।
शहर बरेली सतगुरु की कृपा इन पर भी आई ।
गुरमुख बन गए कुटिया के, गुरु की महिमा लहराई ।
अपने गुरु केशवानंद से लगन इन्हें थी प्यारी।
भजन भाव सेवा करते थे, महिमा थी इनकी न्यारी ।
सन 2003 में एक साहित्यिक संस्था बनाई।
नाम दिया पगडंडी और एक किताब छपवाई।
बैठे-बैठे कविताओं को बना दिया करते थे।
खुश करते थे, लोगों को और सुना दिया करते थे ।
इसी बात से मन रोता है याद सताती है।
चले गए वह हमें छोड़कर याद बहुत आती है।

मनीष शर्मा (एमटीएस)

नारी की पहचान

प्रियंका पाण्डेय पुत्रवधू श्री संजय कुमार पाण्डेय

नारी तू है शक्ति- स्वरुपा, पवनपुत्र की अंजना माई।
तू है जग जननी कहलाई !

क्यों अपनी पहचान छुपाई ! क्यों एक अबला नारी कहाई!
धन-वैभव को जो कोई चाहे, तेरे द्वारे हाथ पसारे।
क्षीर सिंधु में चरण दबाकर, नारायण का मान बढ़ाई।।
तू तो लक्ष्मी माँ कहलाई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई छुपाई!

मूर्खों को भी ज्ञानी कर दे, अपने स्वर से सबको स्वर दे।
तेरी शरण में जो कोई आवे, कालीदास सी विद्वता पावे।।
हे माँ तू शारदा कहलाई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

वंचित जो संतति सुख से है, आकर तेरे शरण पड़े हैं।
ममता का तू आँचल देकर, बन गई सब माँओं की माई ।।
तू ही जगदम्बा कहलाई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

राधा, मीरा और रुक्मणी ने, कान्हा से है प्रीत लगाई।
प्रेम स्वरुपा बनकर ये सब, भक्ति का है मार्ग दिखाई।।
कृष्णा की प्रियतमा कहलाई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

पतितों को हो पावन करती, भीष्म को अपने कोख से जनती।
स्वर्ग से तू धरती पर आई, महादेव जी की जटा समाई ।।
तुम हो सबकी गंगा माई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

अपाला, गोशा या मैत्रैयी हो, गार्गी हो या अरुंधती हो।
सीता और अनुसुइया बनकर, शास्त्रार्थ में हार न पाई।।
तू वो विदुषी कहलाई! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

मणिकर्णिका से तुम पूछो, जो वीरता की करती अगुआई।
अंग्रेजों के छुड़ाएं छक्के, जब झाँसी की रानी बन आई।।
तू तो मर्दानी कहलाई! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

जो धरती है राम कृष्ण की, संतों की और ऋषि-मुनियों की।
जिसके मान की रक्षा हेतु, वीरों ने है वीरगति पाई ।।
तू भारत माता कहलाई! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

नाजुक बन कभी तू सकुचाई, कभी हाथन तलवार उठाई।
पानी में कभी गोता खाई, कभी गगन विमान उड़ाई ।।
तू तो नूतन नारी कहाई ! क्यों अपनी पहचान छुपाई !

बेपर्दा पहचान करो तुम, मौन का व्रत अब तोड़ चलो तुम।
खुद को भी वाचाल करो तुम, छोड़ चलो तुम अब अबलाई ।।
सबला की अभिव्यक्ति जो पाई ! तुमने अपनी पहचान जताई,
तू अब सबला नारी कहाई।।

कुम्भ क्या है ?

रंजीत कुमार दास, सलाहकार

ऐसा कहा जाता है कि महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण जब इंद्र और देवता कमजोर पड़ गए, तब राक्षसों ने देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें परास्त कर दिया था। ऐसे में सब पराजित देवता मिलकर विष्णु भगवान के पास गए और सारा वृतांत सुनाया, तब भगवान ने देवताओं को दैत्यों के साथ मिलकर समुद्र यानी क्षीर सागर में मंथन करके अमृत निकालने को कहा। ये दूधसागर ब्रह्मांड के आकाशीय क्षेत्र में स्थित है। सारे देवता भगवान विष्णु जी के कहने पर दैत्यों से संधि करके अमृत निकालने के प्रयास में लग गए। जैसे ही समुद्र मंथन से अमृत निकला देवताओं के इशारे पर इंद्र का पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर उड़ गया। इस पर गुरु शुक्राचार्य के कहने पर दैत्यों ने जयंत का पीछा किया और काफी परिश्रम करने के बाद दैत्यों ने जयंत को पकड़ लिया।

अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव और राक्षसों में 12 दिन तक भयानक युद्ध चलता रहा। कहा जाता है कि इस युद्ध के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों पर अमृत कलश की कुछ बूंदे गिरी थीं, जिनमें से पहली बूंद प्रयाग में, दूसरी हरिद्वार में, तीसरी बूंद उज्जैन और चौथी नासिक में गिरी थी। इसीलिए इन्हीं चार जगहों पर कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। यहाँ आपको बता दें कि देवताओं के 12 दिन, पृथ्वी पर 12 साल के बराबर होते हैं, इसलिए हर 12 साल में महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। कुछ ज्योतिषीय महत्व भी है, वह सब यहां बताया तो लेख बहुत ज्यादा लम्बा हो जायेगा।

घुमा-फिरा कर यही कथा हर जगह आई है कि पौराणिक काल में समुद्र मंथन के बाद जब देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया, तो उस मंथन से अमृत का घट निकला। अमृत को पाने के लिए देवताओं और असुरों के बीच युद्ध छिड़ गया, जिसके चलते भगवान विष्णु ने अपने वाहन गरुड़ को अमृत के घड़े की सुरक्षा का काम सौंप दिया। गरुड़ जब अमृत को लेकर उड़ रहे थे, तब अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिर गईं। तभी से हर 12 वर्ष बाद इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है।

पूर्ण महाकुंभ मेला: यह केवल प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। यह प्रत्येक 144 वर्षों में या 12 महाकुंभ मेले के बाद आता है। महाकुंभ मेला: यह हर 12 साल में आता है, मुख्य रूप से भारत में 4 कुंभ मेला स्थान यानी प्रयागराज, हरिद्वार,

नासिक और उज्जैन में आयोजित किए जाते हैं। यह हर 12 साल में इन 4 स्थानों पर बारी-बारी से आता है। अर्धकुंभ मेला: इसका अर्थ है आधा कुंभ मेला जो भारत में हर 6 साल में केवल दो स्थानों पर होता है, यानी हरिद्वार और प्रयागराज।

कुंभ मेले का पहला लिखित प्रमाण भागवत पुराण में उल्लिखित है, कुंभ मेले का एक अन्य लिखित प्रमाण चीनी यात्री ह्वेन त्सांग (xuanzang) के कार्यों में उल्लिखित है, जो हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान 629-645 ईस्वी में भारत आया था। साथ ही, समुंद्र मंथन के बारे में भागवत पुराण, विष्णु पुराण, महाभारत और रामायण में भी उल्लेख किया गया है।

❖ कुंभ मेले में, पहले स्नान का नेतृत्व संतों द्वारा किया जाता है, जिसे कुंभ के शाही स्नान के रूप में जाना जाता है। यह सुबह 3 बजे शुरू होता है. संतों के अमृत (अमृत) स्नान के बाद आम लोगों को पवित्र नदी में स्नान करने की अनुमति मिलती है।

❖ हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार यह माना जाता है कि जो इन पवित्र नदियों के जल में डुबकी लगाते हैं, वे अनंत काल तक धन्य हो जाते हैं। यही नहीं, वे पाप मुक्त भी हो जाते हैं, यह स्नान उन्हें मुक्ति के मार्ग की ओर ले जाता है। इस साल महाकुंभ 2025 का महत्व अंक ज्योतिष के अनुसार और भी बढ़ जाता है क्योंकि इस साल और 144 वर्षो बाद बनने वाले दुर्लभ संयोग का संबंध मूलांक 9 से है।

इसके अलावा, 144 वर्षो का योग भी 9 (144) है, जो इस संयोग को और अधिक विशेष बनाता है। अंक 9 का संबंध कर्म और आध्यात्मिक उन्नति से होता है। यह किसी व्यक्ति के जीवन में नई शुरुआत और आत्म-सुधार की ओर संकेत करता है।

जीवन एक अज्ञात दौड़

संदीप सिंह (डाटा एंट्री ऑपरेटर)

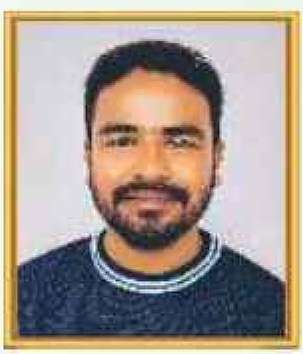

मनुष्य अपने जीवन काल में कई बार दूसरों को देखकर एक ऐसी दौड़ का हिस्सा बन जाता है जिसके रास्ते ओर मंजिल दोनों का पता उसे नहीं होता है कुछ लोग इस दौड़ में आधे रास्ते से वापस चले जाते हैं तो कुछ रास्ता ही बदल लेते हैं इन दोनों के बीच ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो अपने जीवन की इस दौड़ से ही हार मान लेते हैं जबकि जीवन की परिभाषा ही यही है कि जिस दौड़ का हिस्सा हम हैं उसका अंत निश्चित है तो इसमें हारने का अर्थ है कि हम इस अज्ञात दौड़ का हिस्सा बनने के लिए सज्ज हैं।

उदाहरण के लिए आज कल के नौजवान हजारों लाखों की संख्या में विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी में यह जानते हुए भी लगे हैं कि सफलता की संभावना बहुत कम है अब इस प्रतियोगिता की दौड़ में कुछ सफल होते है तो कुछ इस दौड़ की फिनिशिंग लाइन से कुछ दूर पहले ही इसे छोड़ देते हैं बल्कि अधिकांश लोगों को तो यह ही नहीं पता कि जिस मंजिल की तलाश में वे हैं उस मंजिल का रास्ता और वह मंजिल वही है जो उन्हें सच में चाहिए क्योंकि बहुत से लोग मंजिल पाने के बाद भी अपनी जिंदगी के साथ समझौता कर धीरे- धीरे इस दौड़ में चलते रहते हैं और तब उन्हें लगता है कि कितना आसान होता है चलते चले जाना, यदि केवल हम चलते होते बाकि सब रुका होता। मैंने अक्सर इस ऊल-जलूल दुनिया को 10 सिरों से सोचने ओर 20 हाथों से पाने की कोशिश में अपने और अपने परिवार के लिए बेहद मुश्किल बनाते हुए पाया है।

शुरू-शुरू में सब यही चाहते है कि सब कुछ शुरू से शुरू हो लेकिन अंत तक पहुंचते-पहुंचते हिम्मत हार जाते हैं। हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती कि वह सब कुछ कैसे समाप्त होता है जो इतनी धूम धाम से शुरू हुआ था हमारे चाहने पर।

सारांश – उपरोक्त के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि जीवन एक दौड़ है लेकिन इसको सिर्फ एक ही दौड़ मानना गलत है। इसमें कई रास्ते तथा कई मंजिलें है। तय आपको करना है कि दौड़ना किस पर है ।

दुर्गम वनों और ऊंचे पर्वतों को जीतते हुए जब तुम अंतिम ऊंचाई को भी जीत लोगे तब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा, तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में जिन्हें तुमने जीता है। जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ का पहला तूफान झेलोगे और कांपोगे नहीं तब तुम पाओगे कि कोई फर्क नहीं सब कुछ जीत लेने में और अंत तक हिम्मत न हारने में ।

मैं गधा था घोड़ा हो गया

जब नौकरी पर आया, तो 20-22 का जवां था।
सभी मेरे बड़े कहते थे, अरे यह तो नया नया है।।
इसे हल्का सा काम दे दो, यह तो अभी गधा है।

मैं काम में मशगूल होता गया ।
काम दिन पर दिन बढ़ता गया ।।
पता ही नही चला दोस्तो ।
मैं कब गधे से गाड़ी बैल बन गया ।।

दिन पर दिन बोझ बढ़ता गया।
मैं गाड़ी का बैल बोझ तले दबता गया।।
बोझ बढ़ता गया मैं बोझ ढोता गया।
मैं गाड़ी का बैल चलता गया।।

मालिक ने हरी घास का लालच दिया।
ऊपर से बोझ और बढ़ा दिया।।
मैं लालच में बोझ उठाता गया।
मैं बैल गाड़ी बोझ तले दबता गया।।

पता ही नही चला दोस्तों ।
कब गधे से बैल गाड़ी बैल बन गया ।।
अब तो जो आलम यह है दोस्तों।
बया क्या करूँ, सबको मालूम ही है दोस्तों।।

किसकी क्या खता बताऊं दोस्तों।
लालच में सबने दौड़ लगा दी।।
कोई बैल तो कोई तांगे का घोड़ा बन गया।
काम तले ऐसा दबा हाफते-हाफते दौड़ता गया।।

अब उम्र भी बढ़ती गई, आंख कान भी बैठते गए।
पर दोस्तों काम और भी बढ़ता गया।।
50 का 100, 100 का 150 अब तो दो सौ पार हो गया।
काम तले ऐसा दबा हाफते-हाफते दौड़ता गया।।

कोई बैल तो कोई तांगे का घोड़ा बन गया।
काम तले ऐसा दबा अब पता ऐसा चलता हैं ।।

बोझ भी खूब उठाता हूं, हाफते-हाफते दौड़ भी लगाता हूं।
अब तो मैं तांगे का ऐसा घोड़ा बन गया हूं।
चौराहे पर चाबुक से कहां से कहां मोड़ दिया जाता हूँ।।

खीम सिंह
(सहायक अधीक्षक)

ब्रेन रोट

मनीष कुमार सिंह (सहायक अधीक्षक)

हाल ही में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी द्वारा ब्रेन रोट को वर्ष 2024 का शब्द घोषित किया गया है। आईए जानते हैं ब्रेन रोट क्या है कि ब्रेन रोट के शाब्दिक अर्थ है की बात करें तो ब्रेन का अर्थ है मस्तिष्क/दिमाग तथा रोट का अर्थ है सड़ना। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने ब्रेन रोट को किसी व्यक्ति की मानसिक या बौद्धिक स्थिति की कथित गिरावट के रूप में परिभाषित किया है जिसे विशेष रूप से ऐसी सामग्री मुख्यत: ऑनलाइन सामग्री जिसे तुच्छ माना जाता है के अत्याधिक उपयोग के परिणाम के रूप में देखा जाता है।

आसान भाषा में अगर हम समझें तो इसका आशय निम्न श्रेणी की ऑनलाइन सामग्री, जिसका हमारे जीवन मे कोई उपयोग नहीं है, के अत्याधिक उपभोग करने के कारण हमारे दिमाग पर पड़ने वाली नकारात्मक प्रभाव से है। जिस प्रकार जंक फूड का उपभोग हमारे शरीर के लिए हानिकारक है उसी प्रकार ऐसी ऑनलाइन सामग्री का उपभोग हमारे दिमाग के लिए हानिकारक है। आप यदि अपने आसपास गौर करें तो पाएंगे कि ज्यादातर युवा मोबाइल की जादुई दुनिया में खोए हैं और यूट्यब इंस्टाग्राम जैसे एप्लीकेशन पर व्यर्थ में ही रील स्क्रोल करने में व्यस्त है। एक के बाद एक रील आती है और ऐसा करते-करते कब घंटों बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता। इसका प्रतिकूल प्रभाव बच्चों और युवाओं मे अधिक देखा जा सकता है। जैसे बच्चों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन व आक्रामकता का आना, लगातार सिर दर्द का होना, काम में ध्यान न लगना, नींद की कमी तथा लगातार थकावट महसूस करना आदि।

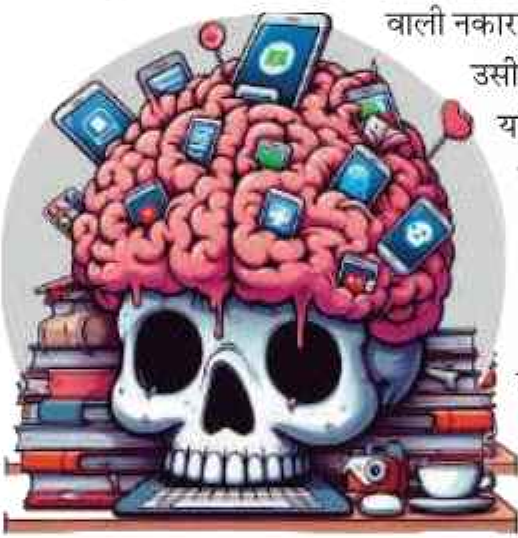

यदि युवा पीढ़ी ने अपना समय रील स्क्रोल करने में गंवाने की बजाय कोई उत्पादक स्किल नहीं सीखी तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के आ जाने के कारण लिपिकीय कार्यशैली वाली नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है यद्यपि अच्छी बात यह है कि यदि हम चाहें तो इसे रोका जा सकता है। इसके लिए हमें अपनी दिनचर्या में कुछ छोटे बदलाव लाने की आवश्यकता है जैसे कि अपनी स्क्रीन टाइम को सीमित करें। अपना समय अच्छी पुस्तकों पढ़ने में लगायें। अच्छी नींद ले और सोने से एक घंटा पहले मोबाइल का इस्तेमाल न करें। यदि आप अब तक इस लेख को पढ़ रहे हैं तो इसका अर्थ यह है कि आप इस विषय की गंभीरता को समझ रहे हैं आशा है कि आप अपनी दिनचर्या में बदलाव कर स्वयं तथा अपने बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने में जरूर प्रयास करेंगे।

अब्दुल समद पुत्र श्री अलीम हुसैन

जुगनू की रोशनी

जुगनू की रोशनी हैं, या काशाने चमन में,
या शमा जल रही है, फूलों की अंजुमन में

जुगनू की रोशनी है, या काशाने चमन में
आया है आसमान से उड़कर कोई सितारा
या जान पड़ गई है, महताब की कबा में

जुगनू की रोशनी है, या काशाने चमन में
या शब की सल्तनत में
दिन का सफीर बनकर आया है।

जुगनू की रोशनी है, या काशाने चमन में
गुरुवत में आकर चमका था
गुम नाम था वतन में
या समा जल रही है, फूलों की अंजुमन में।।

माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ

माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ
जिम्मेदारियाँ उठाने के काबिल हो गया हूँ,
बन गया हर किसी की ख़्वाहिश को पूरा करने वाला जादूगर,
लगता है कि मैं सर्कस का जोकर हो गया हूँ,

हर कोई चाहता है मुझे अपनी जरूरतों के अनुरुप तरासना,
लगता है कि मैं कुम्हार का चाक हो गया हूँ,
हर कोई मुझे छलना चाहता है ,
हर शख़्स मेरे राज जानना चाहता है।

लिए फिरता है हर शख़्स
यहाँ प्रेम का झोला,
मुझे उसमे क़ैद करना चाहता है ।

अब समझने लगा हूँ , मैं भी लोगों के जज्बातों को,
लगता है कि अब मैं भी नादान से समझदार हो गया हूँ
माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ
जिम्मेदारियाँ उठाने के क़ाबिल हो गया हूँ,

मुझे याद आने लगे है वो पुराने दोस्त , वो पुराने खेल,
दोस्तों के साथ घर से बाहर निकल जाना,
बेवक्त घर वापस आना, मां की डांट और उसका दुलार ,
सब याद आने लगे हैं , माँ मुझे वो नटखट तराने सताने लगे हैं,

अब चाहता हूँ फिर से वही पहुँच जाऊँ ,
और तेरी ममता भरी गोदी में समा जाऊँ,
न किसी की परवाह, न किसी का स्नेह,
फिर से तेरे आंचल में खुद को ढक कर,
मैं तेरा नटखट लाला बन जाऊँ।

माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ,
जिम्मेदारियाँ उठाने के काबिल हो गया हूँ ।
शहर में कुछ नहीं सिवाय बेचैनी और सियासत के,
चाहता हूँ कुछ वक्त निकालकर ,
फिर से तुम्हारे साथ शरारती हो जाऊँ,

धर्मवीर सिंह (वरिष्ठ अधीक्षक)

वक्त नहीं मिलता इस कामयाब वाली जिन्दगी से,
लगता है कि अब मैं उस शहर को छोड़कर,
इस शहर का हो गया हूँ
माँ अब मैं बड़ा हो गया हूँ
जिम्मेदारियाँ उठाने के काबिल हो गया हूँ।

बेटी

विनय चंद (सहायक अधीक्षक)

अब वो बड़ी हो गई है
कंधे से जरा ऊपर तक, आराम से आती है,
बात-बात पर बस यही जताती है कि अब मैं बड़ी हो गई हूँ पापा,
उसकी आदतें, व्यवहार सब कुछ तेजी से बदल रहा है ।

जिद्दी हो गई है,
मैं डरता हूँ मगर वो नहीं डरती,
दुनियां की हर अच्छी बुरी शय से अट्रैक्ट होती है,
टोकने पर आपा खोती है,

कम कर के आंकने लगी है मुझे, अपनी सहेलियों के डैडी से,
गिनाते हुए उनकी आलीशान जिंदगी,
ब्रांडेड जूते, कपड़े फोन और घड़ी,
हाँ हो गई है वो अब बड़ी, समझता हूँ,

वो चाहती है, उड़ने दूँ उसे,
इस खूंखार इंसानी जंगल में, पर फैलाए अकेले,
मगर मैं डरता हूँ, पर वो नहीं डरती,
क्योंकि इसी जंगल में उड़ रही हैं

उसकी सहेलियाँ चहचहाती हुई, परफिशानी करती हैं,
कभी डिस्को थेक, कभी रात के जश्न, कभी दोस्तों संग मटरगश्ती,
उसे कोफ्त होती है क्योंकि
मैं इस तरह की रियायतें देने में कंजूस हूँ,
शायद इसीलिए उसकी नजर में मैं दकियानूस हूँ,

ओल्ड फैशन बाप की तरह उसके साथ चलता हूँ,
तो उसे शर्म आती है,
इसीलिए मेरे साथ आने से वो कतराती है,
अब वो नहीं सुनना चाहती है बचपन से बार-बार दोहराई गई वही कहानी,
कि उसकी पैदाइश वाले रोज कैसा बावरा हुआ था मैं,

वो बोर होती है, मगर हैरत है,
मै अभी तक नहीं उकताया,
वो ताकीदें मानना नहीं चाहती,
पाबंदियों के खिलाफत में है,

ऊँची आवाज में बात करने लगी है,
अपने लिए फैसलों में मेरा दखल हरगिज बर्दाश्त नहीं उसे,

पता ही नहीं चला, कब वो मेरी गोदी से उतरकर,
छोड़ कर मेरी उंगली, दूर चली गई,
इतनी कि
उससे बात करने में मेरे हौसले लरजने लगे हैं,
लिहाज की देहरी लाघने को तैयार,
वो जाना चाहती है मुझसे दूर,
तोड़कर रंगबिरंगी ऊन से बने कोसे कोसे...
हां, अब वो बड़ी हो गई है।

स्त्री की चाह

स्त्री चाहे हर नारी को,
पग-पग पर न टोका जाए।
वेश- भूषा व रहन- सहन से,
उसको न अब परखा जाए ।।

स्त्री पुत्री, स्त्री भगिनी,
दयिता और जननी कहलाये।
कामकाजी या तिरिया हो,
घर को वो ही स्वर्ग बनाए ।।

पुत्री चाहे मात-पिता से,
लाड़-दुलार उसे मिल जाए।
भगिनी चाहे अपने वीर से,
घर में वो अपना पद पाये।।

पत्नी चाहे आर्यपुत्र से,
मान सम्मान वो उसे दिलाये।
दुलहिन चाहे सास-ससुर से,
अपना घर- संसार बसाये ।।

जननी चाहे तनय से अपने,
आदर व सत्कार वो पाये।
ध्यान रखे जब सास बने वो,
घर उसका न बंटने पाये ।।

कामकाजी रमणी चाहे दफ्तर में,
भेदभाव न होने पाये ।
घर से बाहर जब वो निकले,
कोई उँगली उठ न पाये ।।

आज की नारी नहीं है अबला,
सबला बन अब वो दिखलाये।
आन पर उसकी बात बनी तो,
दुर्गा-चण्डी वो बन जाये ।।

तिरिया चाहे गृह कार्यों में,
सभी मिलकर हाथ बंटाए ।
ज्यादा की कुछ चाह न रखती,
घर उसको अपना मिल जाये ।।

सजना है अधिकार स्त्री का,
ब्यूटी किट उसे मिल जाये ।
बन-ठन कर जब घर से निकले,
ब्यूटीफुल का दर्जा पाये। ।।

निधि पाण्डेय
पुत्रवधू श्री संजय कुमार पाण्डेय

काव्यांश कुमार
(डाटा एंट्री आपरेटर)

सरकारी नौकरी - एक सपना

- कभी फुरसत मिली तो बताना है, कुछ दिल की बात सुनाना है, जब से देखा, सरकारी नौकरी का सपना, सब चीजें बेरंग सी लगती है।
- इस बेरोजगारी की दुनिया में, रात दिन हम यही कोसते हैं खुद को। अब तो सुख की नींद भी न आती, जब तक नौकरी का सपना पूरा नहीं होता है।
- नौकरी मिलने की आशा में, हम कई सालों से धक्के खा रहे हैं।
- जिम्मेदारियों का बोझ लिए राहों में यूँ ही उम्मीद नहीं छोड़ी है थककर, हम गिरते हैं गिरकर फिर उठते हैं फिर चलते हैं।
- वो दोस्त यार सब छूट गए, अपने भी हमसे रूठ गए, तुझको पाने की आशा में, कई गहरे रिश्ते टूट गए, अब धुंधली यादें ही बाकी हैं।
- कभी फुरसत मिली तो बताना है, कुछ दिल की बात सुनाना है, सरकारी नौकरी में अब आना है।

पासपोर्ट समाचार

पासपोर्ट बनवाने वालों की संख्या हो गई चार गुणा

- पासपोर्ट सेवा केंद्र और आरपीओ कैंप की क्षमता 900 प्रतिदिन
- पर्यटन के साथ नौकरी के लिए विदेश जाने वाले बनवा रहे पासपोर्ट

अमर उजाला ब्यूरो बरेली। पर्यटन ही लेकर नौकरी के लिए विदेश में संभावनाएं बढ़ रही हैं। पासपोर्ट बनवाने के लिए बढ़ती भीड़ से इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय से लेकर पोस्टऑफिसों तक केंद्र बनाकर क्षमता बढ़ाई गई है। बरेली में एक दिन में 900 आवेदकों की प्रक्रिया पूरी कराने की व्यवस्था है, जबकि पोस्ट ऑफिसों में बने केंद्रों पर भी 390 आवेदक के पासपोर्ट बनाने की क्षमता है।

शहर में सैटेलाइट के पास पासपोर्ट सेवा केंद्र संचालित किया जा रहा है। यहां प्रतिदिन 800 आवेदकों की प्रक्रिया पूरी कराने की क्षमता है। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय परिसर में भी पासपोर्ट बनाने के लिए आरपीओ कैंप संचालित किया जा रहा है जहां 100 आवेदकों की क्षमता है। इसके अलावा बरेली समेत विभिन्न जिलों में आठ डाकघरों में भी पासपोर्ट सेवा केंद्र संचालित किए जा रहे हैं, जहां 390 आवेदकों की प्रक्रिया पूरी कराने की क्षमता है। हाल के वर्षों में पासपोर्ट बनवाने वालों की भीड़ बढ़ी है। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की जानकारी के अनुसार 2012 से अब तक पासपोर्ट बनवाने वालों की संख्या चार गुना हो गई है।

> पासपोर्ट बनवाने में किसी को कोई परेशानी नहीं हो, इसलिए मुख्यालय समेत आठ डाकघरों में भी पासपोर्ट बनाए जा रहे हैं। 1900 लोगों की पासपोर्ट संबंधी प्रक्रिया प्रतिदिन पूरी कराने की व्यवस्था बरेली में ही है। कार्यालय में तीन दिन इन्क्वायरी के लिए आने वाले लोगों की समस्याओं का निदान कराया जा रहा है।
> – शैलेंद्र सिंह, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

अपाइंटमेंट नहीं तो 10 से एक बजे के बीच पहुंचें: क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में पासपोर्ट से संबंधित इन्क्वायरी के लिए सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को करीब 200 लोग पहुंच रहे हैं। इनमें अधिकतर लोग तो अपाइंटमेंट लेकर पहुंच रहे हैं, लेकिन तमाम लोग बिना अपाइंटमेंट लिए पहुंच जाते हैं। अगर अपाइंटमेंट नहीं है तो 10 बजे से एक बजे के बीच ही पहुंचें, अन्यथा निराश होकर लौटना पड़ सकता है।

पासपोर्ट के आवेदन के लिए यह दस्तावेज

पहचान प्रमाण पत्र के लिए : आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, सरकारी सेवा पहचान पत्र, बैंक पासबुक लगाए जा सकते हैं।

पते के लिए : आवेदक के नाम बिजली बिल, टेलीफोन बिल, जल आपूर्ति, गैस कनेक्शन, आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, आवेदक की फोटो, किरायानामा, आयकर निर्धारण आदेश प्रयोग किया जा सकता है।

जन्म तिथि के लिए : नगर निकाय अथवा रजिस्ट्रार द्वारा निर्गत जन्म प्रमाण पत्र, स्कूल का प्रमाण पत्र, विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र, मतदाता फोटो पहचान पत्र, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस का प्रयोग किया जा सकता है।

सोमवार को पासपोर्ट ऑफिस द्वारा राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सरकारी कार्यों में हिंदी का इस्तेमाल अधिक करें

बरेली। एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के एम्बीथिएटर में शनिवार को राजभाषा सम्मेलन व राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली एवं राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम आयोजित किया। सरकारी कार्यों में हिंदी के इस्तेमाल पर जोर दिया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. केपी सिंह व पुरुषोत्तम शर्मा निदेशक राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय आंचलिक कार्यालय, लखनऊ मौजूद रहे। शैलेन्द्र सिंह क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी (आरपीओ) व डॉ. सचिन कुमार यादव, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने मुख्य अतिथियों का अभिनन्दन किया।

पासपोर्ट आपके द्वार स्कीम शुरू

पहले दिन सांसद समेत 15 आवेदकों के मोबाइल वैन में बने पासपोर्ट

150 किलोमीटर दायरे में मौके पर पहुंचेगी वैन

राजभाषा की उन्नति से ही देश की उन्नति संभव

बरेली, अमृत विचार : राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय और राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की ओर से शनिवार को एक दिवसीय राजभाषा सम्मेलन एवं कार्यशाला का आयोजन हुआ। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के एम्बीथिएटर में हुए सम्मेलन में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कि राजभाषा की उन्नति से ही देश की उन्नति संभव है। डॉ. सर्वजीत सिंह बेदी ने विभिन्न देशों में हिंदी के विकास की स्थिति पर प्रकाश डाला। पुरुषोत्तम शर्मा निदेशक राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय लखनऊ ने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग पर जोर दिया। सम्मेलन की शुरुआत शैलेंद्र सिंह क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, डॉ. सचिन कुमार यादव संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय लखनऊ ने की। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी ने बताया कि कार्यालय लगातार राजभाषा में उन्नति की ओर अग्रसर है। डॉ. निरुपम शर्मा, डॉ. यतीन्द्र कुमार कटारिया, डॉ. दीप्ति भारद्वाज ने भी विचार रखे। दिनेश सिंह, नीरज लाल सोनी आदि मौजूद रहे।

पासपोर्ट के लिए अपडेट प्रमाण पत्र लेकर जाएं

बरेली, वरिष्ठ संवाददाता। पासपोर्ट आवेदन के बाद आवेदकों को बायोमैट्रिक के दौरान दस्तावेजों की जांच करानी होती है। दस्तावेजों की जांच के दौरान अपडेट दस्तावेज न ले जाने के कारण कई बार मजबूरन आवेदकों को वापस लौटना पड़ता है। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि किसी प्रकार की समस्या से बचने के लिए आवेदक अपडेट दस्तावेज लेकर पहुंचे। इसके साथ ही अब आधार कार्ड को जन्मप्रमाण पत्र के रूप में मान्य नहीं किया जाएगा। बल्कि इसे एड्रेस प्रूफ के रूप में मान्य किया जाएगा। पासपोर्ट विभाग के अधिकारियों ने बताया कि दस्तावेज सत्यापन के दौरान अधिकांश आवेदक अपडेट दस्तावेज लेकर नहीं आते हैं। इससे काफी परेशानी होती है।

राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया

पासपोर्ट समाचार

उपलब्धि | जयपुर में आयोजित हुआ कार्यक्रम, लगातार तीसरी बार दूसरे स्थान पर

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने पर बरेली पासपोर्ट कार्यालय पुरस्कृत

सांसद छत्रपाल ने मोबाइल वैन में बनवाया पासपोर्ट

पासपोर्ट मोबाइल वैन का शुभारंभ करते सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार •

जागरण संवाददाता, बरेली : क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय को मिला पासपोर्ट मोबाइल वैन का ट्रायल पूरा हो गया है। शनिवार से वैन में पासपोर्ट बनाने की प्रक्रिया आरंभ हो गई है। सांसद छत्रपाल गंगवार ने अपना पासपोर्ट बनवाने की औपचारिकता पूरी कराने के साथ वैन का शुभारंभ किया। यह वैन 150 किमी के दायरे में पहुंचकर पासपोर्ट की औपचारिकता पूरी कराएगी।

विदेश मंत्रालय के निर्देश पर नागरिकों को 'पासपोर्ट सेवाएं, उनके द्वार' कार्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय को पासपोर्ट मोबाइल वैन मिली है। कुछ दिनों से जिसका ट्रायल चल रहा था। ट्रायल पूरा होने के बाद यह सुविधा आम जनता के लिए शुरू कर दी

150 किमी दायरे में भ्रमण कर पासपोर्ट बनाएगी वैन

गई। सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार ने फीता काटकर वैन का शुभारंभ किया। पासपोर्ट बनवाने के लिए सांसद ने आवेदन भी किया था, आज उन्होंने मोबाइल वैन में ही अपनी औपचारिकता भी पूर्ण कराई। यह वैन को कुछ दिन क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय परिसर में ही रहेगी। कार्यक्षेत्र के जिलों के आवेदकों को पासपोर्ट संबंधी सेवाएं बेहतर ढंग से प्रदान करने को प्रतिदिन 25 आनलाइन अपाइंटमेंट वेबसाइट पर जारी कर दिए गए हैं। इस मौके पर क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेन्द्र सिंह समेत पूरा स्टाफ मौजूद रहा।

हिंदी के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया

बरेली, अमृत विचार : विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में पासपोर्ट कार्यालय में शुक्रवार को कार्यक्रम का आयोजन हुआ। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य देश और विदेश में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाना है, ताकि हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो। उन्होंने बताया कि पासपोर्ट कार्यालय बरेली को नगर राजभाषा की कार्यान्वयन समिति की ओर से प्रथम पुरस्कार मिल चुका है। विदेश मंत्रालय की ओर से भी विश्व हिंदी दिवस पर दो बार कार्यालय को प्रथम पुरस्कार मिल चुका है। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की ओर से भी पुरस्कार मिल चुका है। कार्यालय को यह पुरस्कार तीसरी बार मिलने जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के लिए आरपीओ बरेली को मिला द्वितीय पुरस्कार

बाल कलाकार

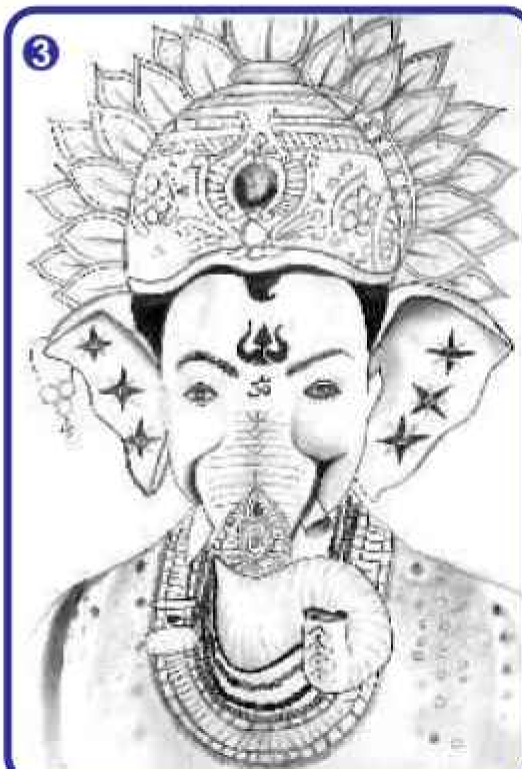

1 आराध्या सिंह
पुत्री श्री शैलेन्द्र सिंह

2 आक्षी ओली
पुत्री श्री विनय चन्द्र

3 रिद्धि सिंह
पुत्री श्री दिनेश सिंह

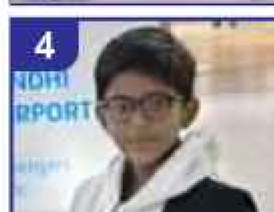

4 अभ्युदय सिंह
पुत्र श्री दिनेश सिंह

5 प्रतिष्ठा सिंह
पुत्री श्री शैलेन्द्र सिंह

स्वच्छता पखवाड़ा, वृक्षारोपण एवं पदयात्रा के छायाचित्र

कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण संबंधी छायाचित्र

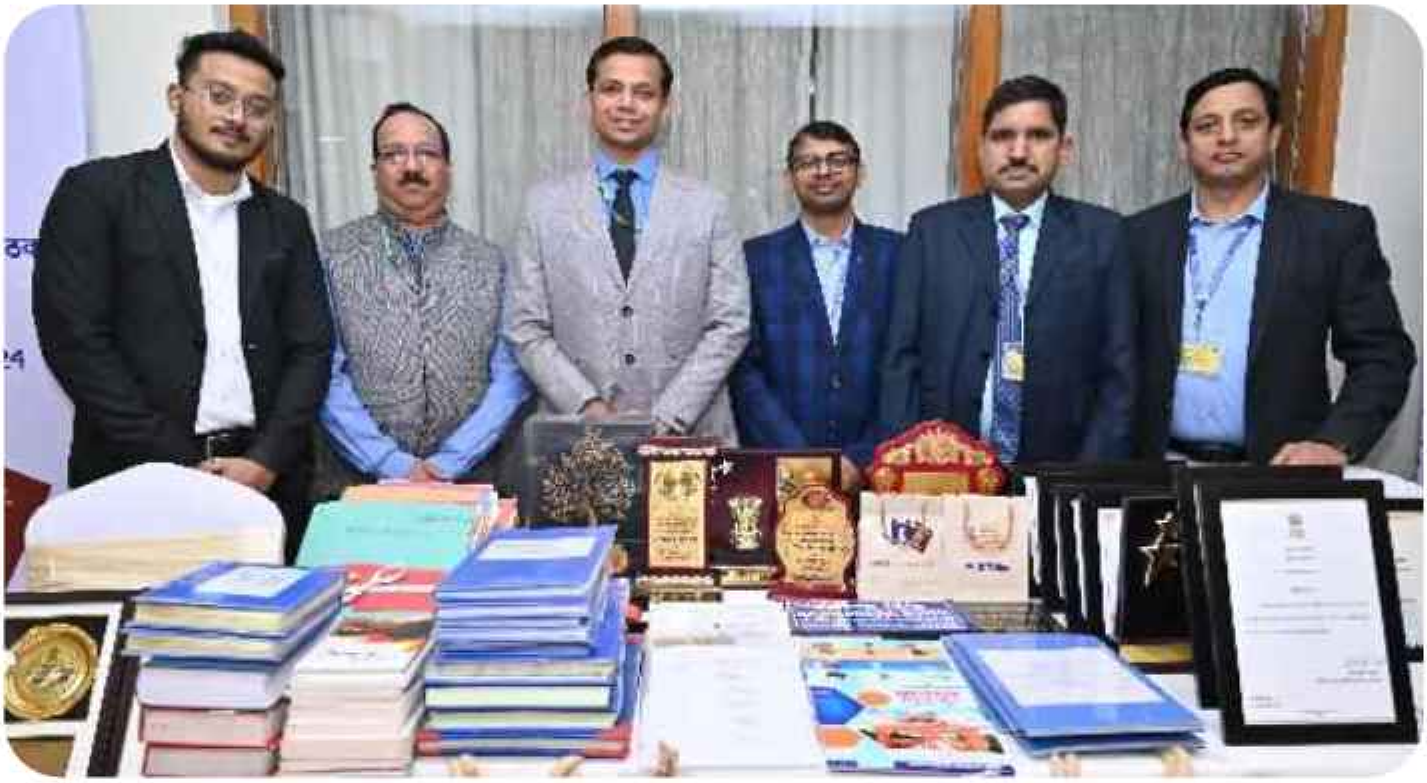

गणतंत्र दिवस, 2025

पत्रिका प्रकाशन समिति

मिथुन कुमार (सदस्य)	संदीप शुक्ला (उपाध्यक्ष)	शैलेन्द्र सिंह (संरक्षक)	दिनेश सिंह (सम्पादक)	मो. आतिर अंसारी (सदस्य)

सफलताओं के शिखर को छूता एक नया भारत - एक श्रेष्ठ भारत

बरेली की कुछ प्रमुख स्थानों की झलक

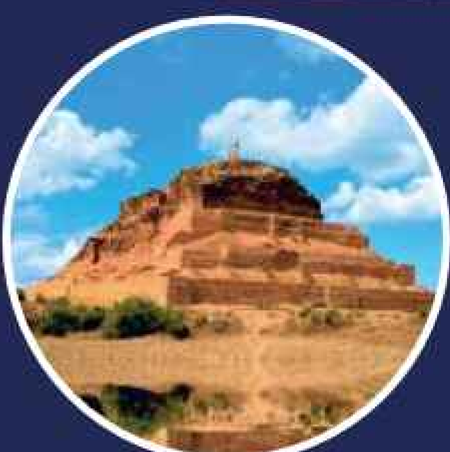

पांचाल किले की प्रतिकृति

बरेली हवाई अड्डा

बरेली झुमका चौराहा

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कॉम्पलैक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शिनी नगर, बरेली - 243122